मासिक

अरफात किरण

रायबरेली

समय की अति आवश्यक मांग

समय की अति आवश्यक मांग ये है कि इस्लामी जागरुकता का जो वातावरण इस्लामी दुनिया में इस समय स्थापित हो रहा है और इसको रोकने के लिये तरह–तरह की ताक़ते अलग–अलग मक्कारियों से काम ले रही हैं। इसके मुक़ाबले पर विशेष ध्यान दिया जाये क्योंकि ये ताक़ते यहूदी ज़हनियत और ईसाई मिशनरी के भाव के साथ मुस्लिम समाज को अपनी डगर से हटाने, इस्लामी चरित्र को बिगाड़ने और सही इस्लामी विचारों की जगह इस्लाम विरोधी विचारों को जगह देने के उपाय और साज़िशों से काम ले रहीं हैं और जगह–जगह बहुत हद तक अपनी कोशिशों में कामयाब भी हुई हैं। इन्हीं कोशिशों का नतीजा है कि इस वक़्त मुस्लिम उम्मत कई जगहों पर टुकड़ों में बट चुकी है और उनमें आपसी फूट ने जगह बना ली है।

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

मर्कजुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

OCT 13

₹10/-

अगर मानवता न हो तो संसार का क्या मूल्य है

वो मानवता जो दुनिया में पनप रही है, फल–फूल रही है, गुल खिला रही है, शाहकार बना रही है, किताबों के ढेर लगा रही है, पुस्तकालय भर रही है और अब भी उसके अन्दर ज़हानत का ख़ज़ाना है, अब भी उसके अन्दर मेहनत का ख़ज़ाना है, अब भी उसके अन्दर गुल का खिलाना है, ये इन्सान जिससे दुनिया की बहार है अगर इन्सान न हो तो दुनिया की क्या क़ीमत है। इन्सान ही से इसकी बहार है। इन्सान ही से इसकी रौनक़ क़ायम है। इन्सान ही से इसकी चमक–दमक बरक़रार है। चले जाइये आप क़ब्रिस्तान में तो क्या वहां आपका दिल लगेगा। चले जाइये म्यूज़ियम में तो क्या वहां रहने को दिल चाहेगा। कैसे–कैसे जानवर हैं, कैसे–कैसे पुतले हैं लेकिन वहां आप ठहर नहीं सकते, देखेंगे और चले आयेंगे। लेकिन इन्सान की बस्ती से इन्सान नहीं घबराता। जंगल से गुज़रता है तो डरता हुआ ख़ुदा से दुआ करता है कि ख़ैरियत से गुज़र जाये और इन्सानों के पास सही सलामत पहुंच जाये। अगर इन्सान को इन्सान से मुहब्बत न हो, इन्सान को इन्सान के दुख–दर्द का एहसास न हो, इन्सान इन्सान पर तरस न खाये, इन्सान इन्सान से हमदर्दी न करे तो वो इन्सान नहीं भेड़िया है और कौन है जो भेड़िये की तारीफ़ करता है और कौन है जो भेड़िये से नफ़रत नहीं करता और कौन है जिसका भेड़िये की बुराई से दिल नहीं दुखता। इतनी बड़ी भीड़ में है कोई शख़्स जो ये कहे कि आप भेड़िये की बुराई क्यों कर रहे हैं लेकिन जब इन्सान भेड़िया बन जाये तो क्यों आपका दिल नहीं दुखता। क्यों आपके दिल पर चोट नहीं लगती। इसके नाम से नफ़रत का इज़हार क्यों नहीं होता। क्या इन्सान भेड़िया बनने के लिये बनाया गया है? इन्सान तो फ़रिश्ता बनने के लिये बनाया गया है। इन्सान तो वली बनने के लिये बनाया गया है। इन्सान तो हमदर्द मख़लूक बनने के लिये बनाया गया है और इसे सर्वश्रेष्ठ प्राणी का और हमारी शायरी, हमारी बोलचाल, हमारे एहसास और हमारी महफ़िलों में हम इसकी इसी हैसियत से चर्चा करते हैं।

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अक्टूबर २०१३ ई०

अंक:१०

वर्ष:५

इस अंक में:

देश की ख़बर लीजिये..२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

रूढ़िवादिता..३
मौलाना अब्दुल्लाह अब्बास नदवी

हम क्या हो सकते थे लेकिन क्या हैं.......................... ४
हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी

नमाज़ सुन्नत के मुताबिक़ पढ़िये..............................६
मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी

शराब घातक ज़हर..९
मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

हिजरत क्या है..११
डॉक्टर सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

इस्लाम से भय कैसा..१२
मौलाना शमसुल हक़ नदवी

मस्जिद के ज़िम्मेदारों के लिये कुछ इस्लाह तलब पहलू..१४
मौलाना मुहम्मद अहमद साहब

नोबल ईनाम..१७
जनाब शाह आलम

एक अटल वास्तविकता..१९
मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी रह०

साम्प्रदायिकता का बढ़ता हुआ रूझान..........................२०
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

الإمام أبي الحسن الندوی

مرکز

संरक्षक

हज़रत मौलाना सैय्यद
मुहम्मद राबे हसनी नदवी
अध्यक्ष – दारे अरफ़ात

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात

सम्पादकीय मण्डल

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाख़ुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी
मो० हसन नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

प्रति अंक–10रु वार्षिक–100रु०
सम्मानीय सदस्यता–500रु० वार्षिक

www.abulhasanalinadwi.org

FAX-0535-2211386

E-Mail: markazulimam@gmail.com

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉं, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से
छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कजुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

देश की ख़बर लीजिये

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

भारत में एक लम्बे समय तक बर्तानिया ने शासन किया और यहां के लोगों को गुलाम बनाकर रखा। फिर बीसियों साल की लगातार मेहनत और कुर्बानी के परिणाम में ये देश स्वतन्त्र हुआ। कुर्बानियां मुसलमानों ने भी दी हैं और हिन्दुओं ने भी दी हैं लेकिन आज़ादी का बिगुल सबसे पहले मुसलमानों ने बजाया। इसके क्रियाशील प्रयासों का आरम्भ मुसलामनों ने किया और हिन्दु भाइयों को शामिल करके स्वतन्त्रता संग्राम प्रारम्भ किया। गांधी जी को मैदान में लाने वाले मौलाना मुहम्मद अली जौहर थे। शुरू से आख़िर तक हिन्दुओं और मुसलमानों ने मिलकर सब कुछ किया। ये एकता की शक्ति थी कि अंग्रेज़ों को देश छोड़ना पड़ा लेकिन उन्होने जाते–जाते देश में ऐसे बीज डाल दिये कि ये देश आपस के झगड़ों में उलझा रहे और इसकी योग्यताएं नष्ट होती रहें और अजीब बात ये है कि बहुत से लोग अंग्रेज़ों की इस साजिश का शिकार हुए।

अंग्रेज़ लेखक ने इस बात को स्वीकार किया है कि हिन्दुओं और मुसलमानों को आपस में लड़ाने के लिये उन्होंने कैसी–कैसी साज़िशें की। एक अंग्रेज़ लेखक ने यहां तक लिखा है कि हमने इतिहास में ऐसे तथ्यों को मिला दिया है कि हिन्दु और मुसलमान कभी मिल नहीं सकते। इसका परिणाम ये हुआ कि आज़ादी के तुरन्त बाद ही देश को बांट दिया गया। इसी एक देश के वासियों ने इस तरह एक दूसरे का ख़ून बहाया जो यहां के हज़ारों साल के इतिहास पर एक बदनुमा दाग़ है।

अजीब बात ये है कि सब हुआ और कितने लोगों ने सोचा कि नुक़सान किसका हो रहा है और फ़ायदा कौन उठा रहा है? भारत को लूट कर ले जाने वालों ने अपने प्रतिनिधी ऐसे बिठा दिये कि आज तक देश की चूल नहीं बैठ सकी। किसी भी देश के लिये बहुत बड़े ख़तरे की बात ये है वहां के रहने वालों में एक दूसरे पर विश्वास उठ जाये और एक दूसरे को दुश्मनी की नज़र से देखा जाने लगे। इसके परिणाम में ऐसा बिखराव पैदा होता है कि संभाले नहीं संभलता। आज़ादी के बाद ही से फूट का जो वातावरण अंग्रेज़ो की ओर से एक सोची समझी साज़िश के परिणाम में उत्पन्न हुआ था उस पर लोग ध्यान नहीं देते। जब तक फूट की जड़ नहीं ख़त्म की जायेगी उस समय तक हालात की बेहतरी आसान नही है।

आज़ादी के बाद से यहां जो पाठ्यक्रम पढ़ाया जा रहा है उसका बेस अंग्रेज़ों ने तैयार किया। साठ साल बीत जाने पर भी हम अभी तक ऐसा पाठ्यक्रम नहीं तैयार कर सके जो इस देश के लिये लाभप्रद हो और उसके परिणाम में विश्वास का वातावरण उत्पन्न हो सके। इसी प्रकार ऐसे लिट्रेचर की आवश्यकता है जो विश्वास के वातावरण को बहाल करके भ्रांतियां दूर करे। वो औरंगज़ेब जिसके हिन्दुओं के साथ बहुत अच्छे संबंध एक इनकार न करने वाली वास्तविकता हैं, आजतक पाठ्यक्रम में उसको हिन्दुओं का वध कराने वाला, ज़ालिम और अत्याचारी के तौर पर देखा जा रहा है। इसके अलावा मुसलमानों के बारे में ऐसी बातें पाठ्य पुस्तकों में हैं कि उनको पढ़ने से कभी भी ज़हन साफ़ नहीं हो सकते और इसका परिणाम साफ़ है कि जब मुसलमानों को दूसरे नम्बर के नागरिक की हैसियत से देखा जायेगा, तो उनके अन्दर भी कुभावों का जन्म होगा और इसके अनुचित परिणाम सामने आयेंगे।

अब तो स्थिति ये है कि इस मसले का राजनीतिकरण कर लिया गया है। राजनीतिक पार्टियां इसकी आग में अपनी रोटियां सेकती नज़र आती हैं। ख़ासकर के नाम व शोहरत व हिन्दुत्व की दुहाई देने वाली पार्टियों के सामने तो इसके आगे कोई नारा ही नही है। वो चाहते हैं कि हिन्दुओं की बहुतायत मुसलमानों से नफ़रत करने लगे तो उससे उनके वोट बैंक में वृद्धि होगी। इसीलिये इस तरह के लोग जगह–जगह दंगे की आग भड़काना चाहते हैं। अभी मुज़फ़्फ़रनगर का ताज़ा फ़साद भी इसी की एक खुली मिसाल है। इसमें दरिन्दगी की जो इन्तिहाई शक्ल अपनायी गयी उसने मानवता का सर शर्म से झुका दिया था। दंगे ज़ाहिर है कि हर जगह नहीं होते और हमेशा नहीं होते, लेकिन जब तक फूट की जड़ें मौजूद हैं इसकी कोई ज़मानत नहीं कि किस को कहां दौरा पड़ जाये और फिर पड़ोसी–पड़ोसी का गला काटे और इन्सानियत शर्मसार हो कर रह जाये।

देश के सच्चे हितैशी को उसके लिये उठना पड़ेगा और अन्दर से हालात का जायज़ा लेकर फूट की जड़ों को समाप्त करना होगा। जब विश्वास का वातावरण स्थापित होगा और सबकी योग्यताएं देश की उन्नति के लिये ख़र्च होंगी, तो कोई बड़ी बात नहीं कि ये देश दुनिया के दृष्टिकोण पर सबसे बड़ी ताक़त बन कर उभरे, और दुनिया को इससे व्यवहारिक पाठ भी प्राप्त हो।

मौलाना अब्दुल्लाह अब्बास नदवी

रूढ़िवादिता

स्वाभाविक मौत से मरने वालों की बात नहीं, अस्वाभाविक मौत का सामना कितने लोगों को करना पड़ता है, इसका कोई हिसाब–किताब नहीं?अमरीका, यूरोप, ईरान–तूरान की बात छोड़ दीजिये, स्वयं अपने देश में रोज़ाना कितने इन्सानों के खून बहते हैं। पुसिल वाले, सेना और जिन लोगों को आतंकवादी बताया जाता है जिनके मरने की ख़बरे आती रहती हैं, हैं तो सब आदम की औलाद। इसी मिट्टी से पैदा होने वाले। हमारी और आपकी तरह इन्सान लेकिन इस बात की कोई परवाह नहीं और न ये डरने की बात है और न देश के लिये ख़तरा है। रोज़ाना कितनी डकैतियां होती हैं, कितने छापे मारे जाते हैं, अख़बार में पढ़िये और रद्दी में डाल दीजिये, ये कोई ख़ौफ़ व ख़तरे की बात नहीं है।

रोज़ाना कितना अनुचित माल, नशीले पदार्थ, ज़हरीले खाद्य पदार्थ और शराब एक शहर से दूसरे शहर हस्तानान्तरित होती रहती है। फ़ौजी पहरों और पुलिस की मौजूदगी और चौकसी के बावजूद जुए, सट्टे का कारोबार पूरी सरगर्मी के साथ चलता रहे तो न देश को ख़तरा है न क़ौम को।

अव्यवहारिकता, अनैतिकता, छल–कपट, धोखाधड़ी, रिश्वत का हद से बढ़ा हुआ लेन–देन और खाद्य सामग्री एवं दवाओं का अत्यधिक मूल्य इनसे न क़ौम को ख़तरा है न राष्ट्र को और न अन्तर्राष्ट्रीय मानवता की बिरादरी को।

लेकिन ऐसे लोग अगर समाज में बढ़ जाते हैं जो अकारण हत्या को हराम समझते हैं और हत्यारे की पकड़ करते हैं और ऐसे क़ानून बनाना चाहते हैं जिससे जुर्म को बढ़ावा न मिले बल्कि उसका ख़ात्मा हो, ऐसे उसूलों पर चलना चाहते हैं जिनसे लोगों की सम्पत्तियां, औरतों की इज़्ज़त सुरक्षित रहें, तो वो देश के लिये, क़ौम के लिये, बल्कि सारी दुनिया के बहुत बड़ा ख़तरा हैं, ऐसे लोग रूढ़िवादी कहे जाते हैं।

सत्तरहवीं सदी ईसवी की पुरानी इस्तेलाह रूढ़िवादी (FUNDAMENTALIST) जो कैथोलिक्स ने अपने एक गिरोह (FACTION) के लिये प्रयोग की थी, उसको उन मुसलमानों के लिये प्रयोग किया जा रहा है, जो मानवाधिकार की बहाली और सदाचार व सद्व्यवहार के सन्देष्टा हैं, जो इस बात का संकल्प लेते हैं कि साम्प्रदायिकता समाप्त की जाये, ग़रीबों को नहीं ग़रीबी ख़त्म की जाये। रोटी, इलाज व शिक्षा प्राप्त करना हर इन्सान का हक़ है जो उसको मुफ़्त चाहिये। न्याय मुफ़्त और जल्द मिलना चाहिये।

न्याय ख़रीदने व बेचने की चीज़ नहीं है। इन्सान अपनी जगह बरी और शरीफ़ है जब तक कि उसका कोई जुर्म साबित न हो जाये। ऐसा न हो कि हर व्यक्ति को बदमाश और चोर समझा जाये जब तक कि उसकी बुराई साबित न हो जाये। चोर बाज़ारी की सभी क़िस्में, नाप–तौल में कमी और हर तरह की धोखाधड़ी क्षमा न करने योग्य गुनाह समझा जाये। क़ानून के सामने अमीर–ग़रीब, उच्च पद वाला और मामूली सा नौकर सब बराबर का स्थान रखते हों। यही वो कुछ मोटे–मोटे तथ्य हैं जिनके संग्रह को रूढ़िवादिता कहा जाता है।

अनमोल वचन

- मां–बाप की ख़िदमत करो उनका हक़ अदा करो।
- शैतान की राह नाफ़रमानी और घमन्ड है और इन्सान की राह इताअत और आजिज़ी है।
- इन्सान अपने भविष्य के बारे में कुछ नहीं जानता अत: अल्लाह पर भरोसा करना चाहिये।
- अल्लाह तआला की रज़ामन्दी में ही भलाई और बेहतरी होती है क्योंकि अल्लाह तआला अपने बन्दों के बारे में बेहतर जानता है।

हम क्या हो सकते थे लेकिन क्या हैं?

हज़रत मौलाना सैय्यद मोहम्मद राबे हसनी नदवी

मुसलमानों की आबादी दुनिया के लगभग सभी देशों में पायी जाती है और वो देश जिनमें वो बहुसंख्यक हैं उनमें उनकी बड़ी संख्या है। ये संख्या ऐसी है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और दूसरे मामलों में नज़रअन्दाज़ नहीं की जा सकती है। मुसलमानों के इन देशों की अर्थव्यवस्था भी मज़बूत है। इनमें से बहुत से देश अपने आन्तरिक भण्डार के लिहाज़ से दुनिया के सर्वप्रर्थम देशों में गिने जाते हैं। उनमें से कुछ भण्डार ऐसे हैं कि दुनिया के बहुत बड़े देश भी उनमें अपने को इनका मोहताज समझते हैं। मुसलमान अगर एक उम्मत के तौर पर काम करें तो दुनिया की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और आम राय उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नहीं हो सकती। उनकी ध्यान रखे बिना दुनिया का कोई काम अन्जाम नहीं पा सकता है।

मुसलमानों को अल्लाह तआला की तरफ़ से जो दीन अता किया गया है वो पूरी मानवता के सुधार का ज़िम्मेदार है। वो न केवल मुसलमानों की इज़्ज़त व ताक़त का कारण है बल्कि सारी दुनिया की इज़्ज़त व ताक़त का उद्‌गम यही दीन बन सकता है। लेकिन इस काम की ओर ध्यान पूरी दुनिया को क्या स्वयं मुसलमानों को भी नही हैं। वो न अपने दीन का महत्व समझते हैं और न एक अन्तर्राष्ट्रीय और श्रेष्ठत्म मिल्लत होने के नाते अपनी ताक़त को समझते हैं। वो अपने दीन की इस अहमियत और अपनी अज़ीम ताक़त से फ़ायदा उठाने और दूसरों को फ़ायदा पहुंचाने की तरफ़ कोई ध्यान नहीं देते और इसीलिये जो फ़ायदेमन्द तरीक़ा है उसे अपनाते नही हैं। हालांकि उनके दीन के महत्व की ये मांग है कि वो खुद भी इससे सही फ़ायदा उठायें और दूसरों को भी और दूसरो को भी इसके महत्व व लाभ से परिचित करायें। मुसलमानों को अल्लाह तआला की तरफ़ से दावत वाली उम्मत बनाया गया है। उनका महत्व उस पानी की तरह है जिससे इन्सानो की प्यास बुझती है और सूखी खेतियां हरी–भरी हो जाती हैं। लेकिन इस समय दूसरों की प्यास बुझाने और दूसरों की खेतियां हरी–भरी करने की बात तो अलग रही मुसलमान खुद अपनी प्यास नहीं बुझा पा रहे हैं और खुद अपनी खेतियों को हरा–भरा नहीं बना पा रहे हैं। इस समय दुनिया के देशों में कम ऐसे देश होंगे जहां मुसलमानों पर मुसलमान होने के कारण अत्याचार न किये जा रहे हों और बेबसी व लाचारी का सामना न हो। उनका हाल ये हो गया है जहां मुसलमान अल्पसंख्यक हैं वहां उनको राजनीतिक और आर्थिक कठिनाइयों व मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है और जहां मुसलमान बहुसंख्यक है वहां उनको अपने दीन पर सही तरह से अमल करने और उसको लागू करने में तरह–तरह की कठिनाइयां सामने आ रही हैं।

ये स्थिति अगर मुसलमान एक कमज़ोर, बेक़ीमत जीवन–यापन के साधनों से वंचित हों तो समझ में आ सकती थी, उनकी संख्या बहुत कम होती तो समझ में आ सकती थी लेकिन इस समय दुनिया की पांच अरब आबादी में वो एक अबर से ज़्यादा, विश्व के डेढ़ सौ देशों में से एक तिहाई के क़रीब हैं। संयुक्त राष्ट्र में वो जिस राय की तरफ़ हो जायें उस राय का नाकाम होना मुमकिन नहीं। वो दुनिया के मुल्कों की बिरादरी में कोई एक पक्ष लें तो उनके पक्ष को गिराया नहीं जा सकता और वो अपनी ज़मीनी दौलत को सही ढ़ंग से इस्तेमाल करें तो दुनिया के बड़े–बड़े देश उनके क़दमों पर गिर जायें। वो एक होकर अपनी राजनीतिक शक्ति को बढ़ाए तो दुनिया का कोई फ़ैसला उनकी राय जाने बग़ैर न हो सकेगा।

लेकिन हो क्या रहा है। मुसलमान इन तमाम ताक़तों और सलाहियतों के बावजूद उन्हें विपरीत परिस्थितियों

का सामना करना पड़ रहा है। जो छोटे से छोटा गिरोह आपस की कई टुकड़ियों में बटा हुआ है और ऐसी नफ़रत की दुश्मन से भी न होगी। भाई–भाई से जुदा है बल्कि उसको गिराने और हराने की ख़ातिर दुश्मन से भी मदद ले लेता है। इस्लाम की इज़्ज़त, मिल्लत की इज़्ज़त, अपने गिरोह और इदारे की इज़्ज़त के बजाये सिर्फ़ अपनी इज़्ज़त की फ़िक्र में लगा हुआ है। वो अपनी इज़्ज़त की फ़िक्र के लिये चाहे वो दिखावे की और सिर्फ़ झूठी इज़्ज़त हो, अपने ख़ानदान की, अपनी मिल्लत की इज़्ज़त को बर्बाद कर सकता है। लोगों से लेकर संस्थाओं और अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरियों तक भी मुसलमान का यही तरीक़ा नज़र आ रहा है।

ऐसी स्थिति में इस क़ौम की उन्नति व सफलता की आशांए कहां से क़ायम की जा सकती हैं। लेनिक इस सबके बावजूद इस विशाल संसार के ताबेदारों के लिये मायूसी की बात नहीं है, इसमें उम्मीद की किरन इन इस्लामी शिक्षाओं में है जो हमको क़ुरआन व हदीस से मिलती हैं। उनको अगर हम अपना सकें तो हम अपनी तमाम कमज़ोरियों को दूर कर सकते हैं और मुसलमानों के इतिहास में बार–बार हुआ है कि मिल्लत इतनी गिर गयी कि इसका उठना मुश्किल लगने लगा, इतने में खुदा का एक बन्दा उठा और उसने अल्लाह और उसके रसूल के बताये हुए तरीक़े पर चलते हुए सुधार का प्रयास किया और प्रयास सफल हुआ। इसीलिये ये उम्मत उतार–चढ़ाव से तो गुज़री लेकिन ख़त्म या तबाह न हुई।

आज ज़रूरत है कि हम ग़ौर करें कि हम अपनी कमज़ोरियों को कैसे दूर कर सकते हैं जो हमको तबाही व बर्बादी में डाले हुए हैं। हमको चाहिये कि उन कमज़ोरियों के सुधार की फ़िक्र करें। बाहर के दुश्मनों से लड़ने से पहले हमको अपने अन्दर के दुश्मन से लड़ना होगा। बुख़ार में पड़े आदमी को पहले अपने बुख़ार को दूर करने की फ़िक्र करनी चाहिये ताकि वो सेहत के साथ ताक़त आज़माई में मज़बूत साबित हो सके।

हमारी मिल्ली शक्ति व महानता का राज़ इसी में है कि हम "एक दूसरे की मदद करो नेकी और तक़वे के कामों में और एक दूसरे की मदद न करो गुनाह और सरकशी के मामले में" और हुज़ूर पाक स0अ0 का क़ौल है, "आपस में गुस्सा न करो और न साज़िश करो और न आपस में मुक़ातआ करो और अल्लाह के बन्दे भाई–भाई बन जाओ" हम सिर्फ़ इन दो नसीहतों को सामने रखें, और अपनी ज़िन्दगी को उनके मुताबिक़ ढ़ालें तो हमारी एकता मज़बूत दीवार की तरह बन सकते हैं। हमारी ताक़त अपराजेय चट्टान बन सकती है हमारा समाज शानदान चरित्र व व्यवहार का समाज बन सकता है कि जिसको देखकर हमारे दुश्मन रश्क करें और केवल रश्क ही नहीं बल्कि इसकी ओर आकर्षित होने और इसकी नक़ल करने की ओर लपक कर बढ़ें और हमारे मार्गदर्शन और संरक्षण में अपने को देने के इच्छुक हों। क्या हमारे अतीत में ऐसा नहीं हुआ?क्या हुज़ूर स0अ0 ने तेइस साल के अर्से में जो समाज प्रशिक्षित करके खड़ा किया था उस समाज ने दुनिया के ऐसे बड़े हिस्से को अपना दीवाना बना दिया था। हालांकि उनकी भौतिक शक्ति अपने दुश्मनों की भौतिक शक्ति से कम थी, उनकी संख्या उनके दुश्मनों की संख्या कम थी और उनके जीवन यापन के साधन दुश्मनों के जीवन यापन से कम थे। लेकिन उनके पास ईमान की ताक़त थी। बेग़र्ज़ी और इख़लास की ताक़त थी। अल्लाह के हुक्म के सामने सर झुका देने और नफ़्स को मारने की ताक़त थी। आज हमारे पास ये ताक़ते मौजूद नहीं। हम खुदा के हुक्म और मिल्लत के फ़ायदे के लिये अपनी अन्दरूनी ख़्वाहिशों और नफ़्स को कुर्बान नहीं कर सकते।

हमारे मामूली ज़ाती फ़ायदे का नुक़सान हो या अपनी झूठी इज़्ज़त के किसी हिस्से को धक्का पहुंचता हो तो हम शरीफ़ से शरीफ़ आदमी को ज़लील करके रख दें। मिल्लत के बड़े से बड़े लाभ को कुर्बान कर दें। खुदा और रसूल के अहम से अहम हुक्मों को तोड़ दें। ऐसी सूरत में नतीजा मालूम हुआ कि पहले मिल्लत की तबाही फिर उसके लोगों की बर्बादी व ज़िल्लत। आज अफ़सोस की यही बात है कि मुसलमान उम्मत पहले अन्तर्राष्ट्रीय है फिर राष्ट्रीय फिर मनहैसुल जमाअत, फिर मनहैसुल अफ़राद उसी ज़िल्लत व नुकबत में पड़ी नज़र आ रही है। और हुज़ूर स0अ0 का वो फ़रमान आज के हाल पर मुन्तबक़ हो रहा है कि "तुम संख्या की अधिकता के बावजूद सैलाब के लाये हुए फेने जैसे हो गये" यानि देखने में बहुत और हक़ीक़त व इफ़ादियत में बहुत कुछ।

मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी

नमाज़ शुरू करने से पहले

ये बातें याद रखिये और उन पर अमल का इत्मिनान कर लीजिये।

1– आपका रुख़ क़िब्ले की तरफ़ होना ज़रूरी है।

2– आपको सीधा खड़ा होना चाहिये और आपकी नज़र सजदे की जगह पर होनी चाहिये। गर्दन को झुकाकर ठोड़ी सीने से लगाना भी मकरूह है और बिला वजह सीने को झुकाकर खड़े होना भी ठीक नहीं। इस तरह सीधे खड़े हों कि नज़र सज्दे की जगह पर रहे।

3– आपके पांव की उंगलियों का रुख़ भी क़िब्ले की तरफ़ रहे और दोनों पांव सीधे क़िब्ला रुख़ रहें। (पांव को दायें–बायें तिरछा रखना सुन्नत के ख़िलाफ़ है) दोनों पांव क़िब्ले की तरफ़ हो जायें।

4– दोनों पांव के बीच कम से कम चार उंगलियों का फ़ासला होना चाहिये।

5– अगर जमाअत से नमाज़ पढ़ रहें हैं तो आपकी सफ़ सीधी रहे। सफ़ सीधी रखने का बेहतरीन तरीक़ा ये है कि हर शख़्स अपनी दोनों एड़ियों के आख़िरी सिरे सफ़ या उसके निशान के आख़िरी किनारे पर रख ले।

6– जमाअत की सूरत में इस बात का भी इत्मिनान कर लें कि दायें–बायें खड़े होने वालों के बाज़ूओं के साथ आपके बाज़ू मिले हुए हैं और बीच में कोई जगह नहीं है।

7– पाजामे को टख़ने के नीचे लटकाना हर हाल में नाजायज़ है ज़ाहिर है कि नमाज़ में इसकी शनाअत और बढ़ जाती है, लिहाज़ा इसका इत्मिनान कर लिया जाये कि पाजामा टख़ने से ऊंचा है।

8– हाथ की आस्तीने पूरी तरह ढकी हुई होनी चाहिये। सिर्फ़ हाथ खुले रहें। कुछ लोग आस्तीने चढ़ाकर नमाज़ पढ़ते हैं, ये तरीक़ा दुरुस्त नहीं है।

9– ऐसे कपड़े पहन कर नमाज़ में खड़े होना मकरूह है जिन्हें पहन कर इन्सान लोगों के सामने न जाता हो।

नमाज़ शुरू करते वक़्त

1– दिल में नियत कर लें कि मैं फ़लां नमाज़ पढ़ रहा हूं, ज़बान से नियत के लफ़्ज़ो को कहना ज़रूरी नहीं।

2– हाथ कानों तक इस तरह उठायें कि हथेलियों का रुख़ क़िब्ले की तरफ़ हो और अंगूठों के सिरे कान की लौ से बिल्कुल मिल जायें या उसके बराबर आ जायें और बाक़ी उंगलियां ऊपर की तरफ़ सीधी हों। कुछ लोग हथेलियों का रुख़ क़िब्ले की तरफ़ करने के बजाये कानों की तरफ़ कर लेते हैं। कुछ लोग कानों को हाथों से बिल्कुल ढक लेते हैं। कुछ लोग हाथ पूरी तरह कानों तक उठाये बग़ैर हल्का सा इशारा कर देते हैं। कुछ लोग कान की लौ को हाथों से पकड़ लेते हैं। सब तरीक़े ग़लत हैं और सुन्नत के ख़िलाफ़ हैं। इनको छोड़ देना चाहिये।

3– ऊपर दिये गये तरीक़े पर हाथ उठाते वक़्त "अल्लाहु अकबर" कहें और फिर दाहिने हाथ के अंगूठे और छोटी उंगली से बायीं कलाई के चारों तरफ़ घेरा बनाकर उसे पकड़ लें और बाक़ी तीन उंगलियों को बायें हाथ पर इस तरह फैला दें कि तीनों उंगलियों का रुख़ कोहनी की तरफ़ रहे।

4– दोनों हाथों को नाफ़ से ज़रा सा नीचे रखकर ऊपर दिये गये तरीक़े पर बांध लें।

खड़े होने की हालत में

1– अगर अकेले नमाज़ पढ़ रहे हों या इमामत कर रहें हों तो "सुब्हानकल्लाहुम्मा" फिर सूरह फ़ातिहा फिर कोई और सूरह पढ़ें और अगर किसी इमाम के पीछे हों तो सिर्फ़ "सुब्हानकल्लाहुम्मा" पढ़कर ख़ामोश हो जायें और इमाम की क़िरआत को ध्यान लगाकर सुनें। अगर इमाम ज़ोर से न पढ़ रहा हो तो ज़बान चलाये बग़ैर दिल ही दिल में ध्यान लगायें रखें।

2– जब ख़ुद क़िरआत कर रहे हों तो सूरह फ़ातिहा पढ़ते वक़्त बेहतर ये है कि हर आयत पर रुक कर सांस तोड़ दें, फिर दूसरी आयत पढ़ें, कई–कई आयतें एक सांस में न पढ़ें। इस तरह पूरी सूरह फ़ातिहा पढ़ें लेकिन इसके बाद की क़िरआत में एक सांस में एक से ज़्यादा आयतें भी पढ़ लें तो कोई हर्ज नहीं।

3– बग़ैर किसी ज़रूरत के जिस्म के किसी भी हिस्से को हरकत न दें। जितने सुकून के साथ खड़े होंगे उतना ही बेहतर है। अगर खुजली वग़ैरह की ज़रूरत हो तो सिर्फ़

एक हाथ इस्तेमाल करें और वो सिर्फ़ सख़्त ज़रूरत के वक़्त और कम से कम।

4– जिस्म का सारा ज़ोर एक पांव पर देकर दूसरे पांव को इस तरह ढ़ीला छोड़ देना कि उसमें लोच आ जाये नमाज़ के आदाब के ख़िलाफ़ है, इससे परहेज़ करें। या तो दोनों पांव पर बराबर–बराबर ज़ोर दें या एक पांव पर ज़ोर दें तो इस तरह कि दूसरे पांव में लोच न पैदा हो।

5– जम्हाई आने लाने लगे तो उसको रोकने की पूरी कोशिश करें।

6– खड़े होने की हालत में नज़रें सजदे की जगह पर रखें। इधर–उधर या सामने देखने से परहेज़ करें।

रुकू में

रुकू में जाते वक़्त इन बातों का ख़्याल रखें।

1– अपने ऊपर के धड़ को इस हद तक झुकांए कि गर्दन और पीठ एक सतह पर आ जायें, न उससे ज़्यादा झुकांए न उससे कम।

2– रुकू की हालत में गर्दन को इतना न झुकांए कि ठोड़ी सीने से मिलने लगे और न इतना ऊपर रखें कि गर्दन कमर से ऊंची हो जाये, बल्कि गर्दन और कमर एक सतह पर होनी चाहिये।

3– रुकू में पांव सीधे रखें उनमें लोच न होना चाहिये।

4– दोनों हाथ घुटनों पर इस तरह रखें कि हाथों की उंगलियां खुली हुई हों यानि हर दो उंगलियों के दरमियान फ़ासला हो और इस तरह दायें हाथ से दायें घुटने को और बायें हाथ से बायें घुटने को पकड़ लें।

5– रुकू की हालत में कलाइयां और बाज़ू सीधे तने हुए रहने चाहिये। इनमें लोच न आना चाहिये।

6– कम से कम इतनी देर रुकू में रुकें कि इत्मिनान से तीन बार "सुब्हान रब्बियल अज़ीम" कहा जा सके।

7– रुकू की हालत में नज़रें पांव की तरफ़ होनी चाहिये।

8– दोनों पांव पर ज़ोर बराबर रहना चाहिये और दोनों पांव के टख़ने एक दूसरे के बिलमक़ाबिल रहने चाहिये।

रुकू से खड़े होते वक़्त

1– रुकू से खड़े होते वक़्त इतने सीधे हो जायें कि जिस्म में कोई लोच बाक़ी न रहे।

2– इस हालत में भी नज़र सजदे की जगह पर रहनी चाहिये।

3– अगर खड़े होते वक़्त खड़े होने के बजाये खड़े होने का सिर्फ़ इशारा करते हैं और जिस्म के झुकाव की हालत ही में सज्दे के लिये चले जाते हैं उनके ज़िम्मे नमाज़ का लौटाना वाजिब हो जाता है। लिहाज़ा इससे सख़्ती के साथ परहेज़ करें, जब तक सीधे होने का इत्मिनान न हो जाये, सज्दे में न जायें।

सज्दे में जाते वक़्त

सज्दे मे जाते वक़्त इस तरीक़े का ख़्याल रखें कि:

1– सबसे पहले घुटनों को मोड़कर उन्हें ज़मीन की तरफ़ इस तरह ले जायें कि सीना आगे को न झुके। जब घुटने ज़मीन पर टिक जायें उसके बाद सीने को झुकांए।

2– जब तक घुटने ज़मीन पर न टिकें उस वक़्त तक ऊपर के धड़ को झुकाने से एक हद तक परहेज़ करें। आज कल सजदे में जाने के इस ख़ास अदब से बेपरवाही आम हो गयी है। अक्सर लोग सीना शुरू ही से आगे झुकाकर सज्दे में जाते हैं लेकिन सही तरीक़ा वही है जो नम्बर एक और नम्बर दो में बयान किया गया।

3– घुटनों के बाद पहले हाथ ज़मीन पर रखें फिर नाक फिर पेशानी।

सज्दे में

1– सज्दे मे सर को दोनो हाथों के बीच इस तरह रखें कि दोनों उंगलियों के सिरे कानों की लौ के सामने हो जायें।

2– सज्दे में दोनों हाथों की उंगलियां बन्द होनी चाहिये यानि उंगलियां मिली हुई हो और उनके बीच फ़ासला न हो।

3– उंगलियों का रुख़ क़िब्ले की तरफ़ होना चाहिये।

4– कोहनियां ज़मीन से उठी हुई होनी चाहिये। कोहनियों को ज़मीन पर टेकना सही नहीं है।

5– दोनो बाज़ू पहलुओं से अलग हटे हुए होने चाहिये। उन्हें पहलुओं से मिला कर न रखें।

6– कोहनियों का दायें–बायें इतनी दूर तक भी न फैलायें जिससे बराबर के नमाज़ पढ़ने वालों को तकलीफ़ हो।

7– राने पेट से मिली हुई नहीं होनी चाहिये।

8– पूरे सज्दे के दौरान नाक ज़मीन पर टिकी रहे, ज़मीन से न उठे।

9– दोनों पांव इस तरह खड़े रखें जायें कि एड़ियां ऊपर हों और सभी उंगलियां अच्छी तरह मुड़कर क़िब्ला रुख़ हो गयीं हों। जो लोग अपने पांव की बनावट की

वजह से सभी उंगलियां मोड़ने पर क़ादिर न हो, वो मोड़ सकें, इतनी मोड़ने का एहतिमाम करें, बिलावजह उंगलियों को सीधा ज़मीन पर टेकना सही नहीं है।

10– इस बात का ख़्याल रखें कि सज्दे के दौरान पांव ज़मीन से उठने न पायें। कुछ लोग इस तरह सजदा करते हैं कि पांव की कोई उंगलियां एक लम्हा के लिये भी ज़मीन पर टिकती नहीं इस तरह सजदा अदा नहीं होता और "नतीजतन" नमाज़ भी नहीं होती। इससे एहतिमाम के साथ परहेज़ करें।

11– सज्दे की हालत में कम से कम इतनी देर गुज़ारें कि तीन बार "सुब्हानि रब्बिअल आला" इत्मिनान के साथ कह सकें। पेशानी फ़ौरन उठा लेना मना है।

दोनो सजदे के दरमियान

1– एक सजदे से उठकर इत्मिनान से दोज़ानू सीधे बैठ जायें, फिर दूसरा सजदा करें, ज़रा सा सर उठाकर सीधे हुए बग़ैर दूसरा सजदा कर लेना गुनाह है और इस तरह करने से नमाज़ का लौटाना वाजिब है।

2– बायां पांव बिछाकर उस पर बैठें और दायां पांव इस तरह खड़ा कर लें कि उसकी उंगलियां मुड़कर क़िब्ला रुख़ हो जायें। कुछ लोग दोनों पांव खड़े करके उनकी एड़ियों पर बैठ जाते हैं। ये तरीक़ा सही नहीं है।

3– बैठते वक़्त दोनों हाथ रान पर रखे हुए होने चाहिये मगर उंगलियां घुटनों की तरफ़ लटकी हुई नहीं होनी चाहिये। बल्कि उंगलियों के आख़िरी सिरे घुटनों के शुरूआती सिरे तक पहुंच जायें।

4– बैठते वक़्त नज़रें अपनी गोद की तरफ़ होनी चाहिये।

5– इतनी देर बैठें कि इसमें कम से कम एक बार "सुब्हानल्लाह" कहा जा सके और अगर इतनी देर बैठें कि इसमें "अल्लाहुम्मग़फ़िरली वरहमनी वस्तुरनी, वजबुरनी, वहदिनी, वरज़ुक्नी" पढ़ा जा सके तो बेहतर है। लेकिन फ़र्ज़ नमाज़ों में ये पढ़ने की ज़रूरत नहीं है, नफ़िलों में पढ़ लेना बेहतर है।

दूसरा सजदा और उससे उठना

1– दूसरे सजदे में इस तरह जायें कि पहले दोनों हाथ ज़मीन पर रखें, फिर नाक, फिर पेशानी।

2– सजदे की हैयत वही होनी चाहिये जो पहले सजदे में बयान की गयी।

3– सजदे से उठते वक़्त पहले पेशानी ज़मीन से उठाएं, फिर नाक, फिर हाथ, फिर घुटने।

4– उठते वक़्त ज़मीन का सहारा लेना बेहतर है लेकिन अगर जिस्म भारी हो या बुढ़ापे की वजह से मुश्किल हो तो सहारा लेना भी जायज़ है।

5– उठने के बाद हर रकआत के शुरू में सूरह फ़ातिहा से पहले "बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" पढ़ें।

क़ादा में

1– क़ादा में बैठने का तरीक़ा वही होगा जो सजदे में बैठने का ज़िक्र किया गया है।

2– अत्तहियात पढ़ते वक़्त जब "अशहदु अल ला इलाहा" पर पहुंचे तो शहादत की उंगली उठाकर इशारा करें और "इल्लल्लाह" पर गिरा दें।

3– इशारे का तरीक़ा ये है कि बीच की उंगली और अंगूठे को मिलाकर घेरा बनायें और छंगुली और इसके बराबर वाली उंगलियों का बन्द कर लें और शहादत की उंगली को इस तरह उठांये कि उंगली क़िब्ले की तरफ़ झुकी हुई हो। बिल्कुल सीधी आसमान की तरफ़ नहीं उठानी चाहिये।

4– "इल्लल्लाह" कहते वक़्त शहादत की उंगली तो नीचे कर लें लेकिन बाक़ी उंगलिया जिस तरह थीं आख़िरी तक उसी तरह रहेंगी।

सलाम फेरते वक़्त

1– दोनों तरफ़ सलाम फेरते वक़्त गर्दन को इतना मोंड़े कि पीछे बैठे आदमी को आपके होंट नज़र आ जायें।

2– सलाम फेरते वक़्त नज़रे कन्धे की तरफ़ होनी चहिये।

3– जब आदमी दायीं गर्दन फेर कर "अस्सलाम अलैकुल व रहमतुल्लाह" कहें तो ये नियत करें कि दायें तरफ़ जो इन्सान और फ़रिश्ते हैं, उनको सलाम कर रहें हैं और बायें तरफ़ सलाम फेरते वक़्त बायें तरफ़ जो आदमी और फ़रिश्ते हैं उनको सलाम करने की नियत करें।

दुआ का तरीक़ा

1– दुआ का तरीक़ा ये है कि दोनों हाथ इतने उठायें जायें कि वो सीने के सामने आ जायें दोनों हाथों के बीच मामूली सा फ़ासला हो। न हाथों को बिल्कुल मिलायें और न बहुत फ़ासला रखें।

2– दुआ करते वक़्त हाथों के अन्दरूनी हिस्सों को चेहरे के सामने रखें।

शराब

घातक ज़हर

"ऐ ईमान वालों! शराब और जुआ और पांसे और गन्दी बातें शैतान के काम हैं।"

रिवायत पसन्द और आदर्श शासन और रिवायात के हामी समाज में शराब एक बड़ा गुनाह और संगीन जुर्म है समझा जाता था। शराब पीने वाले को सज़ाएं दी जाती थीं और निन्दनीय समझा जाता था। शराब पीने वाले को किसी भी समाज और सोसाइटी में अच्छी निगाह से नहीं देखा जाता था। उनके यहां ये समझा जाता रहा है कि ये एक बुरी लत है और सेहत के लिये बहुत ही ख़तरनाक है। इससे बहुत सी ऐसी बीमारियां पैदा होती हैं कभी–कभी डॉक्टरों के लिये भी मुश्किल हो जाता है।

ये बात साबित है कि शराब चारित्रिक गिरावट का कारण बनती है और बहुत सी बुराइयों को जन्म देती है। ये इन्सान की योग्यता को नष्ट करने का एक यन्त्र है। हदीस शरीफ़ में आता है:

"शराब तमाम गुनाहों की जड़ है।" शराब पीने से रोकने के लिये बहुत से देशों ने विभिन्न उपाय किये और बेपनाह दौलत ख़र्च की और क़ानून बनाये और उसकी रोकथाम के लिये उपाय किये गये लेकिन अन्त में परिणाम ये निकला कि सारी कोशिशें बेकार साबित हुई और उसकी निंदा करने वाली मीडिया को बजाये इसके कि शराब की रोकथाम में उन्हें सफलता प्राप्त होती वो और उन्नति का कारण बना और उनके शराब पीने को बढ़ावा मिला। इसलिये कि शराब के नुक़सान बहुत छिपे हुए और जल्दी न प्रकट होने वाले हैं। आख़िरकार परिणाम ये निकला कि उनकी प्रयास असफल हुए और सभी देशों में शराब पीना अपनी जगह बरक़रार है।

इन्हीं नुक़सानों और शराब से पैदा होने वाले विभिन्न बीमारियों, चारित्रिक गिरावट और बेहयाई को देखते हुए अमरीका की पार्ल्यामेन्ट में शराब विरोधी क़ानून बहुमत से पास हुआ। लेकिन इस क़ानून के बावजूद दिन पर दिन बढ़ोत्तरी हुई और इस क़ानून को आख़िरकार नाकामी का मुंह देखना पड़ा।

क़ानून के द्वारा चरित्र या समाज के सुधार का ये सबसे बड़ा अनुभव था जिसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में नहीं मिलती। अट्ठारहवें बदलाव से पहले कई साल तक एन्टी सैलून लीग (।छज्ै ।स्व्छ स्म्।ळन्म्) रसाएल व जदाएद, भाषण व लेख, तस्वीरें, सिनेमा और बहुत से दूसरे तरीक़ों से शराब की हानियां अमरीका वालों के दिलो दिमाग़ में बिठाने की कोशिश की गयी और इस प्रचार में पानी की तरह पैसा बहाया गया। अन्दाज़ा किया गया है कि आन्दोलन के आरम्भ से लेकर 1925 ई0 तक प्रचार प्रसार पर साढ़े छः करोड़ डालर ख़र्च हुए। शराब के विरोध में जितना लिट्रेचर लिखा गया वो लगभग 19 हज़ार पन्नों पर आधारित था। इसके अलावा शराब विरोधी क़ानून के लागू करने में जो बार अमरीका को चौदह साल में बर्दाश्त करना पड़ा है वो पूरी 45 करोड़ पौंड बतायी जाती है और हाल में संयुक्म राष्ट्र अमरीका की न्यायपालिका ने जनवरी 1920 ई0 से अक्टूबर 1933 ई0 तक के जो परिणाम प्रकाशित किये हैं उनसे पता चलता है कि इस क़ानून को लागू करने के सिललिसे में दो सौ आदमी मारे गये। 53435 क़ैद किये गये। एक करोड़ साठ लाख पौन्ड के जुर्माने लगाये गये। चालिस लाख की लागत की सम्पत्तियां ज़ब्त कर ली गयीं। लेकिन आख़िरकार दुनिया के इतिहास का ये बड़ा सुधार आन्दोलन बेकार साबित हुआ।

भारत भी लोगों को इस बुरी आदतों को छुड़ाने का इच्छुक था। उसने शराब पीने पर पाबन्दी लगाने की भरपूर कोशिश की इसलिये कि आज़ादी से पहले कांग्रेस पार्टी के घोषणा पत्र में ये बात थी कि जब कभी सत्ता हाथ में आयेगी तो वो शराब पीने पर पूरी तरह से पाबन्दी लगायेगी। वाक़्या ये है कि इसने पाबन्दी लगाने की कोशिश भी की लेकिन उसकी सभी कोशिशें भारत की शराबखोरी के आगे नाकाम हो गयीं और शराब पीने में बजाये कमी के बढ़ोत्तरी होती गयी। शराब के व्यापार को अत्यधिक बढ़ावा मिला। सभ्यता व संस्कृति और साधनों की अधिकता और माल व दौलत की अधिकता के

साथ–साथ शराब पीना भी आम होता गया। "मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों–ज्यों दवा की" गुज़रे ज़माने में शराब एक संगीन जुर्म थी इसलिये कि वो चारित्रिक बिगाड़ और जिस्म की सेहत में बिगाड़ पैदा करने वाली थी और चिकित्सीय दृष्टिकोण से भी ये एक हानिकारक वस्तु है। लेकिन चूंकि इसके नुक़सान तुरन्त दिखाई नहीं देते बल्कि इसके प्रभाव अनभिज्ञ रूप से प्रकट होते हैं इसीलिये जो लो दीनी सोच व विचार नहीं रखते वो उन देशों और इस्लाम की लगायी गयी पाबन्दियों पर तरह–तरह के ऐब लगाते रहे और टिप्पणियां करते रहे, और उन पाबन्दियों को हिक़ारत की निगाहों से देखते रहे, और उसको रूढ़िवादी सोच का परिणाम घोषित करते रहे।

शराब के बारे में कहा जाता था कि वो धीरे–धीरे असर करने वाला ज़हर है। कुछ लोग इसके ज़हर होने को भी मानने वाले न थे बल्कि इसको ख़ास दीनी या अख़लाक़ी कमज़ोरी समझते थे। लेकिन बीते कुछ समय में पेश आने वाले वाक़्यों से साबित हुआ कि शराब घातक ज़हर है। उसकी जीती–जागती मिसाल भारत के कुछ शहरों में होने वाली घटनांए और हादसे हैं। दिल्ली में होने वाली घटना इसकी गवाह है और बहुत ही दर्दनाक घटना है। इस तरह की घटनांए शादी–ब्याह और त्योहारों के मौक़ो पर भी सामने आ चुकी है। लेकिन इसे एक इत्तेफ़ाक़ की चीज़ समझकर बजाये इसके कि इबरत हासिल की जाये, नज़र अन्दाज़ किया गया। दिल्ली की घटना आपके सामने है, सरकारी आंकड़ों के अनुसार दो सौ लोग मौत की नींद सो गये और एक बड़ी संख्या ख़तरनाक जिस्मानी बीमारी में घिरी है। राजकोट में भी पच्चीस लोगों की मौत हो गयी है और उन्हीं दिनों दक्षिणी भारत में दस लोगों की जानें गयीं और इसके अलावा बड़े पैमाने पर हादसे होते हैं जिसका न तो अख़्बारों में कोई चर्चा है और न ही कोई चैनल कोई जानकारी देता है।

ये लरज़ा देने वाले और दर्दनाक हादसे दिमाग़ में तरह–तरह के सवाल पैदा करते हैं। इन घटनाओं के बाद शराब पीना अमन व शांति, मानवता के लिये मौत व ज़ेस्त की समस्या बन चुकी है और उसके नुक़सान बिल्कुल सामने आ चुके हैं और इस पर पर्दा डालना नामुमकिन है।

अब ये समस्या केवल दीनी ही नहीं रही कि दीनी विचारों वाले व्यक्ति ही इस पर विमर्श करें, बल्कि स्थिति ये है कि राजनीतिज्ञ व कानून के रक्षकों को भी इस पर गंभीरता ये विचार विमर्श करके इस समस्या का हल खोजना चाहिये।

सभी ज़िम्मेदार हुकूमतें उन सभी दवाओं पर जिनमें एक ज़रा भी नुक़सान का एहतमाल होता है, पाबन्दी लगाती हैं और लाइसेंस और परमिट ज़ब्त किये जाते हैं। शराब के नुक़सान इसके मुक़ाबले कहीं ज़्यादा हैं। अल्लाह तआला का इरशाद है:

"लोग आपसे शराब और क़िमार की बात पूछते हैं, आप कह दीजिये कि इनमें बड़ा गुनाह है और लोगों के लिये मनाफ़े भी हैं और उनका गुनाह उनके मनाफ़े से कहीं बढ़ा हुआ है।"

अतः आवश्यकता इस बात की है कि शराब पर पाबन्दी लगाने के लिये और नौजवान नस्ल को इस बुरी आदतों से बचाने के लिये कोई निर्णायक क़दम उठाया जाये क्योंकि ये ऐसा ज़हर है जो असलहों से भी ज़्यादा ख़तरनाक है। अगर इस सिलसिले में कोई रोकथाम न की गयी और कोई ठोस क़दम न उठाया गया तो भविष्य में इससे भी अधिक ख़तरनाक स्थिति पैदा हो सकती है।

"शराब से बचते रहो ताकि कामयाब हो जाओ।"

नमाज़ की अहमियत

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० के पिता अब्दुल अज़ीज़ मिस्र के गवर्नर थे। उन्होने अपने लड़के उमर को उच्च शिक्षा दिलाने के लिये हज़रत सालेह बिन कीसान के संरक्षण में दे दिया था। ये सालेह बिन कीसान का प्रशिक्षण था कि बनी उमैय्या के ख़ानदान में वो "फ़ारूक़ द्वितीय" पैदा हुए। जिसने ख़िलाफ़त–ए–राशिदा को नये सिरे से जान बख़्शी।

सालेह बिन कीसान ने किस एहतिमाम से उनका प्रशिक्षण किया इसका अन्दाज़ा इस घटना से लगाया जा सकता है कि एक बार उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने नमाज़ में देर की। "तुमने आज नमाज़ में देर क्यों कर दी?उस्ताद ने पूछा?बाल संवार रहा था इसलिये ज़रा देर हो गयी। शागिर्द ने अदब से जवाब दिया। अच्छा बालों को संवारने में इतना मन लग गया कि इसका नमाज़ पर तरजीह दी जाती है। उस्ताद ने डांटते हुए कहा।" उसके बाद उनके पिता को उस्ताद ने ये घटना लिख भेजी। अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० को ये पता चला तो उसी वक़्त एक आदमी को मिस्र से मदीना रवाना किया जिसने आकर सबसे पहले उनके सर के बाल मूंडे उसके बाद किसी से बातचीत की क्योंकि उमर के पिता का यही आदेश था।

प्रशिक्षण का यही नियम था जिसने उमवी ख़ानदान के एक शहज़ादे को "हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि०" बना दिया जिनके बारे में इमाम अहमद बिन हम्बल की राय है कि वो पहली सदी के मुजद्दिद थे।

हिजरत क्या है?

डॉक्टर सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

नये हिजरी साल के शुरू होते ही ज़हन व दिल में रंज व ग़म की दास्तानों और इश्क व अलम के यादें उभरने लगती हैं और कभी हिजरत और कभी सामूहिक व राजनीतिक समस्याओं के अर्थ की नयी तस्वीरें निगाहों को चकाचौंध करने लगती हैं। इतिहास के पन्नों पर कुछ ऐसी हिजरतें छपी नज़र आती हैं जिन पर अमल कर के अज़ीमत व बसीरत के मतवालों ने हिजरत–ए–नबवी का आला नमूना पेश किया है। ये हिजरत एक ऐसा स्टेज है जिससे उन श्रेष्ठ व्यवहार और बुलन्द व उच्च विशेषताओं की फैलाव हुआ और चलन में आयी। जिनसे अल्लाह तआला ने मुहम्मद स0अ0 को सरफ़राज़ किया था। साथ ही साथ ये एक ऐसा चश्मा है जिसकी जाम चढ़ाकर इज़्ज़त व शराफ़त के श्रेष्ठ स्थान को निश्चित कर गया और हर उस हिजरत का वही हाल रहा है जिसकी सिंचाई ख़ालिस तौहीद के अक़ीदे के आब–ए–हयात से होती थी। और जिसका केवल एक ही मक़सद होता था। "अल्लाह के कलमे को बुलन्द करना और अल्लाह की रज़ा की प्राप्ति" इन महानताओं और श्रेष्ठताओं की बुलन्द हिजरत ने स्वीकारिता और क़दर मन्ज़िलत के इस मक़ाम को हासिल कर लिया जिनसे वो सभी हिजरतें महरूम रहीं जिन्होने केवल नफ़्स की ख़्वाहिशों हक़ीर गरज़ों व मक़सदों को सामने रखा और इस महान हिजरत के महल की नीव ख़ालिस नेक नियती, बुलन्द हौसलगी, और श्रेष्ठ उद्देश्यों पर आधारित है और यक़ीनन ये हदीस इसी अर्थ को स्पष्ट कर रही है।

हमेशा से ही ये हदीस नबवी स0अ0 मुसलमानों के ध्यान का केन्द्र रही है। और इल्म व अमल के मैदान में एक बड़ी हैसियत की मालिक रही है। और दीन के उलमा और उम्मत के नेक लोगों ने दिखावा और नुमाइश और नाम व शोहरत के साइबों से नफ़्स को पाक करना इख़लास और लिल्लाहियत और मुहब्बत व उलफ़त जैसे मूल्यवान अर्थ व अनोखे आत्मिक अर्थों और याचनाओं को निकाला। और केवल यही नही रंगारंग विशेषताओं व कमाल का संग्रह, ख़ालिस दीनी व तरबियती ख़्यालात व सोच व अलग अलग इस्लामी विशेषताओं का हसीन व दिलकश संग्रह और एक बहुत मुकद्दस इस्तलाह बन चुका है। जो अव्वल ज़माने में सहाबा किराम रज़ि0 के दिलों में पेवस्त और उनके दिल व रूह में रच बस गया था। और उनके ज़हन व दिमाग़ के दरीचों में पहुंच गया था। जिन्होने हिजरत के अर्थ व मतलब को साबित करके उसकी अमली तस्वीर पेश की थी। और जिन्होने केवल अल्लाह का कलमा और ख़ालिस तौहीद के अक़ीदे को फ़ैलाने के लिये उन दूर दराज़ के देशों की तरफ़ जो शिर्क व बुत परस्ती और ज़लालत व गुमराही के घटाटोप अन्धेरों में डूबे हुए थे, हिजरत की, जैसे हिन्दुस्तान, चीन, मालदीप, मलेशिया और इन्डोनेशिया इत्यादि। इन देशों की ओर उन बुज़ुर्गों की हिजरत का मक़सद केवल हदीस नबवी स0अ0 की पैरवी करना था और ऐसा वाक़्या कुरून उला की पहली दहाई में उस समय हो चुका था जब नबी करीम स0अ0 ने अपने सहाबा के साथ मदीना मुनव्वरा की ओर हिजरत फ़रमाई। अगर अल्लाह और उसके रसूल की ख़ालिस मुहब्बत और इख़लास पर इस हिजरत की बुनियाद न होती और रसूल अरबी स0अ0 का फ़रमान (जिसने अल्लाह और रसूल के लिये हिजरत की तो उसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल ही के लिये होगी) का मिसदाक़ न होती तो वो ज़मीन तौहीद के अक़ीदे और ईमान व यक़ीन की शाख़ों में इस्लामी दावत के फ़ैलाव के सूरत में जो बहार आयी हुई है उसकी ह्रास न होती और ये मानव समाज एक सही इस्लामी समाज में न बदला होता। जिसमें न्याय, बराबरी, रहमदिली, मुहब्बत व वफ़ादारी, इफ़्फत व अमानत, त्याग, खुदशिकनी, हमदर्दी और ग़म बांटना और ख़िदमत के भाव जैसे श्रेष्ठ अर्थ के नादिर नमूने और श्रेष्ठ व्यवहार जो वास्तविक नेकी के ज़ामिन हैं नुमायां नज़र आते है।

इस्लाम के इतिहास के अलग–अलग भागों में हिजरत व मुहब्बत और जांबाज़ी के जो नादिर नमूने पेश आये और उनमें व्यवहार व जवां मर्दी के पुख्ता तौहीद के अकीदे का जो ज़हूर हुआ, दावत–ए–इस्लामी की तारीख़ में उनका रिकार्ड अच्छी तरह सुरक्षित है। उस समय में पुख़्ता ईमान व यक़ीन का उद्गम आवश्यक लाभदायक परिणामों के साथ हुआ जिनसे अल्लाह की राह में हिजरत करने वाले मुसलहीन व मुजद्दीन को अल्लाह का कलमा और इस्लाम की शरीअत की ताक़त और कुफ़्र व ज़लालत और तागूती ताक़तों के ख़िलाफ़ जिहाद के सिलसिले में दो चार होना पड़ा। ..... (शेष पेज 16 पर)

इस्लाम से भय कैसा? (Islamophobia)

शमसुल हक़ नदवी

इस्लाम इन्सानी अक़्ल व समझ की पराकाष्ठा का आख़िरी धर्म है और मानवता के स्थायी मार्गदर्शन के लिये आया है। इसीलिये वो सभी धर्मों से व्यापक व सम्पूर्ण भी है। ये सम्पूर्ण मानवता के लिये है। इसके कार्यक्षेत्र से मानव जीवन का कोई कोना और कोई पहलू बाहर नहीं है। वो उसकी सम्पूर्ण दीनी व दुनियावी और आत्मिक व भौतिक आवश्यकताओं का पूरक और जीवन यापन का सम्पूर्ण नियामक है। इसमें दीनी व दुनियावी और शरीर व आत्मा का भेद नहीं बल्कि दुनिया में अल्लाह के आदेशानुसार जीवन व्यतीत करने का ही नाम इस्लाम है। इसमें इतनी वृहद्ता है कि वो हर दौर में नेकी के मानवीय उन्नति का साथ दे सकता है तथा इसमें इसका मार्गदर्शन कर सकता है। अतः दिल की गहराइयों से इस पर ईमान रखने वालों को जब भी राज–काज की बाग़डोर सौंपी जायेगी ये हमारा दुखी संसार जन्नत का नमूना बन जायेगा। कुरआन करीम का इरशाद है:

"ये वो लोग हैं कि अगर हम इनको देश की सत्ता दे तो नमाज़ पढ़े और ज़कात अदा करें और नेक काम करने का हुक्म दें और बुरे कामों से मना करें।"

ये है इस्लाम प्रियों की इस्लाम प्रियता का सारांश और सम्पूर्ण मानवता के लिये इस्लाम के दीन–ए–रहमत होने का सारांश कि अगर इस्लाम के सच्चे पैरोकारों को शासन व अधिपत्य प्राप्त हो जाये तो दुनिया में शासन व राजनीति के ख़ाक़े अल्लाह के इस छोटे से कथन के प्रकाश में बनेंगे। समाज से लेकर सत्ता व अर्थव्यवस्था, व्यापार, पर्यटन, न्यायपालिका के क़ानूनों और फ़ौजदारी के नियमों, विभिन्न जातियों व बिरादरियों के साथ न्याय और सबके अधिकारों की सुरक्षा यहां तक कि साहित्य, कला व फ़नकारी सबके सब इस के बनाये हुए ख़ाक़े के अनुसार चलेंगे।

इस सृष्टि की रचना करने और इसको चलाने वाले सृष्टा की उपासना और उसके सामने सर झुकाने और उसके आदेशों का पालन करने के साथ–साथ इस्लामिक विचारों वाली सत्ता कुछ इस तरह प्रशिक्षित होगी कि बैतुलमाल की स्थापना के बाद कोई नंगा, भूखा न रहने पायेगा। अदालतों के न्याय बिकने के बजाये मिलने लगेगा। रिश्वत, चालबाज़ी, झूठी गवाहियों और क़स्मों का ख़ात्मा हो जायेगा। अमीर को ग़रीब को ज़लील समझने और उसका हक़ मारने और सताने का कोई हक़ और कोई मौक़ा का बाक़ी न रह जायेगा। चोरियां और बदकारियां, डाके और क़त्ल व लूटपाट का ख़ात्मा हो जायेगा। एक कमज़ोर आदमी रात के अंधेरे या सेहरा या वीराने में सोने या रूपये पैसे को गट्ठर लेकर चलेगा और किसी को आंख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं होगी। ग़रीबों का ख़ून चूस कर तैयार होने वाली महाजनी कोठियों और सूदख़ोर साहूकारों और बैंकों के टाट उलट जायेंगे। शराबी और जुआड़ी अगर अपनी हरकत न छोड़े तो तड़ीपार कर दिये जायेंगे। सिनेमा और थियेटर जो बेहयाई और अश्लीलता का खेल दिखा–दिखाकर समाज की आंखों से लाज–लज्जा को ख़त्म करके बदकारी का तूफ़ान उठाते हैं, उनकी सभी तमाशागाहों को तुरन्त बन्द कर दिया जायेगा।

अश्लील साहित्यों, चारित्रिक गिरावट के अफ़सानों और बेहया शायरी की जगह पाकीज़ा और तामीरी साहित्य लेंगे। शहर व देहात, कूचा व बाज़ार हर जगह इन्सानी शराफ़त और प्यार व मुहब्बत की शहनाइयां बजती सुनाई देंगी।

मानवीय जीवन यापन के नियम किसी विशेष क़ौम व किसी विशेष युग के रस्म व रिवाज पर स्थापित नहीं हैं। बल्कि उसमें इस विचार व सोच की पूरी छूट रखी गयी है जिस पर इन्सान पैदा किया गया है। जब मानव प्रकृति हर युग में स्थापित है तो प्राकृतिक दीन के आदेशों व नियमों को भी स्थापित करना आवश्यक है अन्यथा मानव समाज में ऐसे–ऐसे बदलाव होंगे जो उसको जानवरों से भी बदतर बना देंगे और फिर उसको इन्सान बनने से वहशत होगी।

कुछ अर्से पहले की बात है कि लखनऊ के बलरामपुर अस्पताल में ऐसे लड़के को ईलाज द्वारा मानव प्रकृति पर लाने का प्रयास किया जा रहा था जिसको बचपन में भेड़िया उठा ले गया था मगर ख़ुदा की क़ुदरत की भेड़िये ने उस बच्चे को खाया नहीं बल्कि उसकी मादा जो बच्चे दिये हुए थी अपने बच्चों के साथ उसको भी पालती रही। उस माहौल में उस बच्चे के चलने का अन्दाज़, खाना व बोलना सब बदल गया। उसको इन्सानों से वहशत होती थी। उसको देखने के लिये एक भीड़ लगी रहती थी। लोग

उस पर ख़र्च करने के लिये रुपये भी देते थे लेकिन चूंकि माहौल उसकी प्रकृति पर हावी हो गया था, वो भयभीत रहता था। अन्ततः उसकी मृत्यु हो गयी। ये 1958 या 1959 ई0 का वाक़्या था। स्वयं लेखक ने भी उस लड़के को देखा था।

ये तो सब जानते हैं कि एक शरीफ़ घराने का बच्चा जब चोरों और उचक्कों के माहौल में रहने लगता है तो उसको अपने घर के गंभीर व प्रतिष्ठित वातावरण से घबराहट होने लगती है।

हमारी आज की दुनिया की स्थिति कुछ इसी प्रकार की है। पश्चिमी विचारों व संस्कृति ने इसकी भौतिकता व शहवत रानी की अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था को ऐसे सांचे में ढाल दिया है कि इन्सान अपनी प्रकृति कसे बहुत दूर निकल चुका है। फ़ितरत से दूर निल जाने के बाद उसने हवसरानी और मनमानी ज़िन्दगी की ऐसी दुनिया बनायी है कि फ़ितरत की तरफ़ लौटने में उसको डर लग रहा है। इसलिये तमाम क़ौमें और लोग जो इस नयी और आवारा सभ्यता के छलावे में फंस चुका है। इनको इस्लाम और इस्लाम प्रियो से वहशत होती है। वो इस डर से कि कहीं इस साफ़–सुथरे और मानवीय प्रकृति के प्रवक्ता व पवित्र जीवन व्यवस्था का चलन न हो जाये, भयभीत रहते हैं और इससे बचने के लिये उसको इन नामों से याद करते हैं जिन से लोगों को इस इस्लाम से इस तरह भयभीत करें जैसे सांप, बिच्छू और ज़हरीले जानवरों और जरासीम से डराया और भयभीत किया जाता है। अतः पत्रकारिता और मीडिया की पूरी ताक़त इसके ख़िलाफ़ लगी हुई है। कोई बात कितनी ही ग़लत हो लेकिन जब बार–बार इसे दोहराया जाये, तरह–तरह के विषयों से उसकी अच्छाइयां बतायीं जायें तो वो बुरी और सौ प्रतिशत ग़लत बातें भी सच और सही लगने लगती हैं। इस समय इस्लाम और मुसलमानों के बारे में पश्चिमी क़ौमों और उसके अज़ली दुश्मनों यहूद व नसारा ने यही अन्दाज़ अपना रखा है और इसके असर से पूरब की लज्जावान क़ौमें भी इसका साथ देने लगीं। इसलिये कि इस्लाम आयेगा और इस्लाम प्रियों को दुनिया की व्यवस्था चलाने का अवसर प्राप्त होगा तो हया व शर्म से खाली व धन व भौतिकता के उन भूखों जो कमज़ोरो की इज़्ज़तों से खिलवाड़ करते हैं और उनका ख़ून चूस–चूस कर रंग रलियां मनाते है। उन सबका ख़ात्मा हो जायेगा। ये है इस्लाम और इस्लाम के मानने वालों से डर का कारण जिसकी वजह से इसके विरोध में शोर व हल्ला मचा हुआ है और उसमें वो नाम के मुसलमान भी शामिल हो जाते हैं जिन्होंने पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से अपनी सच्ची प्रकृति पर गर्दा डाल दिया है और जब वो पश्चिमी सभ्यता की ऐनक से इस्लाम को देखते हैं तो उनको इसमें तंगी नज़र आती है। वो घुटन व चुभन महसूस करते हैं। इसलिये वो भी वही बोली बोलने लगते हैं जो उनका पश्चिमी गुरू बोलता है।

ये इस्लाम के लिये कोई नयी बात नहीं। पूरे मानव इतिहास और सारे नबियों की सीरतें इसकी गवाह हैं कि हर युग में इस्लाम का विरोध हुआ है। इस पर तानो के तीरों की बौछार हुई है। लेकिन दीन–ए–हक़ का चिराग़ तमाम तूफ़ानों से गुज़र कर ज़िन्दा रहा है और विरोध पर उतारू क़ौमें तबाह व बर्बाद हुई हैं।

जब आख़िरी रसूल आये तो उनको भी विरोध का सामना करना पड़ा और बेगानों से ज़्यादा अपनो ने सताया मारा और हंसी–मज़ाक़ उड़ाया। मगर फिर दुनिया ने क्या देखा घमन्ड के मतवाले किस तरह मिटते या इस्लाम में आते चले गये। जिस बादशाह ने आप स0अ0 क ख़त को फ़ाड़ा उसके शासन के चीथड़े उड़ गये। आज जब आप स0अ0 को दुनिया से गये हुए चौदह सौ साल हो चुके हैं जो हर पढ़े–लिखे इन्सान की फ़ितरत में है। इस्लाम ने इन सारे तूफ़ानों से गुज़र कर आज भी वैसे ही जिन्दा और इन्सानियत को नजात दिलाने वाला है जैसे पहले दिन था। उस समय भी जो तूफ़ान इस्लाम के ख़िलाफ़ बरपा है वो तूफ़ान भी चलता रहेगा लेकिन इस्लाम पर आंच न आने पायेगी, मिटेंगे वही जो इस्लाम को मिटाना चाहेंगे जैसा कि होता रहा है। और मिटती हुई क़ौमों का इतिहास इसका गवाह है। विरोधियों और इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशों के इस तूफ़ान में ईमानवालों का इम्तिहान है कि वो इस पर जमे रहें और विरोधियों से घबराकर हिम्मत न हारें। ख़ैर उम्मत होने की उन पर जो ज़िम्मेदारी है किसी जज़बातियत का शिकार हुए बग़ैर इसको हिम्मत व हौसले के साथ और उन आदाब के साथ जो कुरआन करीम और रसूल स0अ0 ने उनको बताये हैं अदा करते रहें। विरोध के ये बादल उठते छटते रहे हैं। ये भी छट जायेंगे और ख़ुदाई मदद आयेगी जैसे इस्लाम की चौदह सौ साला इतिहास में आता रहेगा मगर ये नहीं कहा जा सकता कि कब आयेगी और कितने इम्तिहानों के बाद आयेगी। बस इतना ही कहा जा सकता है कि "अल्लाह ही के लिये है ज़मीन व आसमान का लश्कल।"

मस्जिद के ज़िम्मेदारों के लिये

कुछ इस्लाह तलब पहलू

मौलाना मुहम्मद अहमद साहब

आप स0अ0 ने फ़रमाया कि अगर किसी शख़्स का मस्जिद में आना–जाना रहता है तो उसके ईमान की गवाही दो। (हदीस)

सिर्फ़ आने जाने पर ईमान की गवाही की तालीम दी गयी है। इससे आगे बढ़कर अगर कोई मस्जिद की ख़िदमत में लगा रहता है तो उसकी क्या फ़ज़ीलत और जगह होगी?किसी को मस्जिद की ख़िदमत नसीब हो जाये तो ये एक बड़ी नेमत है। इस पर जितना शुक्र किया जाये कम है। कुफ़्फ़ार–ए–मक्का भी मस्जिद–ए–हराम की तामीर और उसकी देखभाल को अपने लिये क़ाबिल–ए–फ़ख़्र महसूस करते थे और अक्सर इसका इज़्हार होता था लेकिन कुरआन करीम ने इसकी काट की कि ईमान के बग़ैर सिर्फ़ मस्जिद की तामीर इन्सान की नजात के लिये काफ़ी नहीं। आज मस्जिद के ज़िम्मेदार, मस्जिद की देखभाल में, मस्जिद की निगरानी से जुड़े हुए कामों को अन्जाम देने में चुस्ती दिखाते हैं लेकिन साथ ही साथ कुछ ख़ामियां भी हैं जिसकी निशानदेही ज़रूरी है। इंशाअल्लाह जिसको दूर करने से ये ख़िदमत हमारे लिये फ़ायदेमन्द साबित होगी। मस्जिद के ज़िम्मेदारों से कुछ ख़ास चीज़ की मांग है, जिनके इन्साफ़ से अपने को और सुर्ख़रू कर सकते हैं।

इमाम का एहतरामः अफ़ज़ल शख़्स ही इमाम बनाया जाता है। कम से कम वो क़िरआते कुरआन और इल्म के एतबार से अफ़ज़ल हो। इमामते कुबरा के लिये भी हज़रत अली रज़ि0 इमामते सुग़रा ही को दलील बनाया था। शरीअत–ए–मुतह्हरह में भी इमाम की कुछ ख़ूबियां बयान की गयीं हैं कि मुत्तक़ी व परहेज़गार हो इत्यादि। जब हमने उस शख़्स को अपनी नमाज़ जैसी अज़ीमुश्शान इबादत के लिये इमाम तस्लीम कर लिया तो फिर उसके ख़िलाफ़ व्यंग, उसके लिये तन्ज़ और उसकी ग़ीबत क्या माने रखती हैं?

मस्जिद का जायज़ा लेने से कसरत से मुशाहिदा होता है कि अइम्मा–ए–किराम की नाक़द्री एक आम शक्ल अख़्तियार करती जा रही है। एक शख़्स को इमाम भी बनाया जा रहा है और उसकी नाक़द्री भी हो रही है। इमाम की इज़्ज़त व एहतराम मस्जिद के ज़िम्मेदार का तरीका होना चाहिये ताकि ज़िम्मेदार से और लोग भी सबक़ सीख सकें। अगर कोई इमाम मस्जिद के जायज़ उसूलों के मुताबिक़ ख़िदमत के लिये आमादा न हो तो शराफ़त के साथ उसे अलग कर दिया जाये। अब तो आम तौर पर अइम्मा–ए–किराम, हाफ़िज़ और आलिम होते हैं। उनके साथ बुरा रवैया तो ख़तरनाक है। सहाबा किराम उन लोगों की ख़िदमत में लगे रहते जो कुरआन करीम की तिलावत या नमाज़ में लगे रहते।

इमाम अबूदाऊद रह0 ने अपने किताब में नक़ल किया है कि कुछ सहाबा किराम एक शख़्स की बड़ी तारीफ़ कर रहे थे। कहने लगे कि हमने इन जैसा आदमी नहीं देखा, जब सफ़र में होते तो कुरआन की क़िरआत में मसरूफ़ हैं और जब सवारी से उतरते हैं तो नमाज़ में मसरूफ़ हैं, तो उन सहाबा किराम से कहा गया कि इस शख़्स का सामान कौन उठायेगा?उनके जानवर कौन चरायेगा? तो सहाबा किराम ने फ़रमाया हम करेंगे, आप स0अ0 ने फ़रमाया तुम सब ख़ैर पर हो। (हयातुस्सहाबा 10/2)

कई बार शुरूआत में इमाम की आमद के वक़्त ऐज़ाज़ व इकराम का मामला होता है लेकिन धीरे–धीरे इमाम की ख़ामियों की तलाश शुरू हो जाती है। इमाम की ग़लतियों पर टोका–टाकी की जाती है। मुस्तहिब्बात के तर्क पर नकीर की जाती है। हालांकि ये नकीर दुरूस्त नहीं। इसी तरह कुरआन करीम में अल्लाह तआला ने फ़रमाया "किसी की टोह में मत रहो" 'किसी के ऐबों को जानने की कोशिश न करो। आप स0अ0 फ़रमाते हैं मैं एक ऐसी क़ौम को जानता हूं जो अपने सीनों को पीट रहे होंगे जिसके मारने की आवाज़ जहन्नम वाले भी सुनेंगे, उनमें एक ताना देने वाले होंगे और वो लोग होंगे जो लोगों के ऐबों के तलाश करते हैं।'

मस्जिद के ज़िम्मेदार ये बात ज़हन में रखें कि इमाम भी इन्सान ही है कोई फ़रिश्ता नहीं कि जो मासूम हो। इसीलिये छोटी–छोटी ग़लतियों को नज़रअन्दाज़ करें।

मुअज़्ज़िन के साथ रवैयाः हदीस में आता है आप स0अ0 ने फ़रमाया कि आख़िरत के दिन लोगों में गर्दन के एतबार से लम्बे मुअज़्ज़िन हज़रात होंगे। एक और हदीस में फ़ज़ीलत वाली चीज़ों का तज़किरा करते हुए आप स0अ0 ने फ़रमाया कि अगर पहली सफ़ और अज़ान देने

का इल्म हो जाये तो आपस में पर्ची डालने की नौबत आ जायेगी। एक तरफ़ मुअज़्ज़िन की ये फ़ज़ीलत है दूसरी तरफ़ ज़िम्मेदारों का रवैया है कि वो मुअज़्ज़िनों के साथ ख़ानदानी नौकर सा बर्ताव करते हैं। उन्हें तनख़्वाह देने का ये मतलब नहीं कि वो हमारे ख़रीदे हुए ग़ुलाम हैं। अगर इस्लामी हुकूमत होती तो बैतुलमाल उनका कफ़ील होता। अब चूंकि बैतुलमाल का वजूद नहीं, इसलिये अवाम उनकी तनख़्वाहों की ज़िम्मेदार है। इसीलिये ज़रूरत इस बात की है कि मुअज़्ज़िन और इमाम दोनों को क़द्र की निगाह से देखें। उनके साथ अच्छा बर्ताव करें। बुरा रवैये से न पेश आयें। कई मुअज़्ज़िन अपने ज़िम्मेदारों के रवैये से आजिज़ रहते हैं। कई बार ज़िम्मेदारों के तंग करने से मुअज़्ज़िन इस अज़ीम ख़िदमत को छोड़ देते हैं। ज़िम्मेदारों को चाहिये कि वो मुअज़्ज़िन को तंग न करें।

मस्जिद के माल व जायदाद की हिफ़ाज़तः बहुत से लोगों ने अपनी जायदादें मस्जिद के लिये वक़्फ़ की हैं। अब उन वक़्फ़ की हुई जायदादों की हिफ़ाज़त मुतवल्ली के सुपुर्द है। कई जगहों पर मस्जिदों की जायदाद पर खुद ज़िम्मेदार ही क़ाबिज़ हैं और किराया बढ़ाने के लिये तैयार नहीं। चलन के ख़िलाफ़ सबसे सस्ते किराये में खुद रह रहे हैं और अगर शुरूआत में मुआहिदा नहीं हुआ है उसके बावजूद क़ानूनी झोल व कमज़ोरी का सहारा लेकर किराया नहीं बढ़ा रहे हैं। ये अपनी ताक़त और ओहदे का नाजायज़ इस्तेमाल है। कई जगहों पर मस्जिद का माल कह कर बेदर्दी से इस्तेमाल किया जाता है, कोई पूछने वाला नहीं। आज मस्जिदों के नाम पर अतिया देने वालों की कमी नहीं लेकिन सही और भरोसे वाले लोगों की कमी है जिसकी वजह से लोग देने से कतराते हैं। इसलिये ज़रूरत इस बात की है कि मुत्वल्ली हज़रात मस्जिदों के माल की सही निगरानी करें। सही जगहों पर किफ़ायत के साथ ख़र्च करने का भी एहतिमाम करें।

मस्जिदों में शोरः मस्जिद अल्लाह का घर है कोई खेल–कूद की जगह नहीं। ये मस्जिदें इबादत व ज़िक्र के लिये हैं। यहां दुनयावी बातों से परहेज़ ज़रूरी है। चीख़ना–चिल्लाना वैसे भी नापंसद है। क़ुरआन हकीम में अल्लाह तआला ने गधे की आवाज़ को सबसे भोंडी आवाज़ बताया और आवाज़ धीरे रखने का हुक्म दिया है। आज जब मस्जिदों के इन्तिज़ामी मामलों की मीटिंग होती है तो मस्जिद में एक दूसरे पर सबक़त ले जाने के लिये ऐसी आवाज़ें बुलन्द होती हैं जिसे बयान नहीं किया जा सकता। आप स0अ0 ने जो क़यामत की निशानियां बयान की हैं उनमें से एक ये भी है कि मस्जिदो में आवाज़ तेज़ होने लगे। खुद भी मस्जिद में शोर न करें और दूसरों को भी शोर करने से रोकें।

इमाम राज़ी रह0 मशहूर मुफ़स्सिर हैं। उन्होंने सूरह तौबा की तफ़सीर के ज़िम्न में तामीर–ए–मस्जिद के इच्छुक लोगों के लिये कम से कम चार ख़ूबियों का होना ज़रूरी बताया है।

1– अल्लाह और आख़िरत पर ईमान

2– नमाज़ का एहतिमाम

3– ज़कात देने का एहतिमाम

4– सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह का ख़ौफ़

नमाज़ का एहतिमाम क्योंकि मस्जिदों की रौनक़ तामीर से नहीं। मस्जिद का मक़सद तामीर नहीं बल्कि मस्जिद की मांग नमाज़ और नमाज़ी है। मस्जिद की तामीर से ज़्यादा मस्जिद को नमाज़ियों से आबाद करने की ज़रूरत है। जब मस्जिदें कच्ची थीं तो नमाज़ी पक्के थे। अब मस्जिदें पक्की हैं, रंगी–पुती हैं तो नमाज़ियों का वजूद नहीं। इसलिये मस्जिद के ज़िम्मेदार न सिर्फ़ ये कि मस्जिद की तामीर की तरफ़ ध्यान दें, बल्कि वो खुद भी नमाज़ों का एहतिमाम करें और मस्जिद को नमाज़ियों से भरने की कोशिश में लगे रहें।

अब अगर जायज़ा लेंगे तो पता चलेगा कि मस्जिद के कितने ज़िम्मेदार नमाज़ों का एहतिमाम करते हैं और कितनों की सिर्फ़ हफ़्ते में हाज़िरी होती है। नमाज़ की अदायगी फ़र्ज़ है। मस्जिद की निगरानी नफ़िल है। फ़र्ज़ से ग़ाफ़िल होकर सिर्फ़ नफ़िल की कसरत किसी की नजात के लिये काफ़ी नहीं।

इस्लाम के फ़र्ज़ों में एक फ़र्ज़ ज़कात भी है। मानो फ़राएज़े इस्लाम के खूगर शख़्स को मस्जिद का अहल क़रार दिया गया है क्योंकि जो फ़राएज़ की पाबन्दी करेगा वो नफ़िल को भी सही ढंग से अन्जाम देने की कोशिश करेगा। जो फ़र्ज़ ही से ग़ाफ़िल हो वो बदरजे ऊला कोताह होगा। मस्जिद के बहुत से ज़िम्मेदार ज़कात की अदायगी से जी चुराते हैं। फ़र्ज़ छोड़कर, ग़रीबों का हक़ दबाकर, मस्जिद की ख़िदमत से क्या फ़ायदा? क्या उन्होंने ये समझ रखा है कि मस्जिद की ख़िदमत ज़कात की अदायगी से अलग कर देगी और इसलिये अल्लाह तआला ने उन ख़ूबियों वाले लोगों को मस्जिद की ख़िदमत के लायक़

क़रार दिया है।

चौथी अहम और बुनियादी ख़ूबी मस्जिद के ज़िम्मेदार को सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह का ख़ौफ़ हो। अल्लाह के अलावा उसे किसी और का ख़ौफ़ न हो। मस्जिद के ज़िम्मेदारों का कोई काम दिखावे के लिये न हो। औरों को दिखाने के लिये कोई काम न किया जाये। अब अगर जायज़ा लिया जाये तो महसूस होगा कि कितने ही आमाल ऐसे हैं जो सिर्फ़ और सिर्फ़ लोगों की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिये किये जाते हैं। जिनसे अल्लाह की रज़ा का कोई लेना–देना नहीं होता। इसीलिये अल्लाह तआला ने मस्जिद के ज़िम्मेदारों के लिये अल्लाह का ख़ौफ़ ज़रूरी क़रार दिया है।

अस्ल में इन चार ख़ूबियों में बहुत सी चीज़ों को पिरो दिया गया है। नमाज़ के एहतिमाम का मतलब ये है कि वो अल्लाह का हक़ अदा करने में सुस्त न हो। ज़कात की अदायगी का मतलब ये है कि बन्दों का हक़ अदा करने पर भी ख़ास ध्यान देता हो। यानि वो अल्लाह का दिया हुआ माल अपने पास अमानत समझ रहा है। अगर अमानत न समझता तो ज़कात अदा करने में सुस्ती दिखाता। जब अमानतदारी की अहम सिफ़त उसमें मौजूद है तो मस्जिद के माल की निगरानी में भी वो अमानत व दयानत ही दिखायेगा। वरना ख़यानत करने वाले तो मस्जिद के माल को बेजा और ग़ैर शरई जगह पर ख़र्च करेंगे। अल्लाह के ख़ौफ़ का मतलब ये हुआ कि मस्जिद से ग़ैर शरई कामों के ख़ात्मे में उसे किसी तरह का डर नहीं है। वरना जो लोगों की ख़ुशनूदी की चाहत रखता हो, वो बेजा कामों को रोकने के बजाये अवाम की तरफ़दारी में ख़ुद ही बेजा कामों का करने वाला होगा। आज जिस तरह के लोगों को मस्जिद का ज़िम्मेदार बनाने की कोशिश जारी है वो निंदनीय है। उन ज़िम्मेदारों के असर पूरे मुहल्ले पर पड़ते हैं। इसलिये नेक, सालेह, अल्लाह से डरने वाले पाक लोगों को मस्जिद का ज़िम्मेदार बनाया जाये और मस्जिद की कमेटियों में कम से कम एक हाफ़िज़ या आलिम को भी शामिल किया जाये ताकि अरबाब की तरफ़ से होने वाली कोताहियों पर लगाम लगायी जाती रहे। जिनके मुफ़ीद मशवरों को मानकर मस्जिद के निज़ाम में इस्लाह लायी जाये।

अल्लाह तआला से दुआ है कि मस्जिद के ज़िम्मेदारों की इस्लाह फ़रमाये और इख़लास–ए–नियत के साथ सही तरीक़े पर मस्जिद का निज़ाम संभालने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन!

शेष : हिजरत का शरई अर्थ

इसलिये कि हिजरी के इस महान उद्देश्य की पूर्ति के लिये एक मोमिन मुहाजिर कभी भी इस बात की परवाह नहीं करता कि हक़ की राह में क्या मुसीबतें सामने आयेंगी। और इसका आख़िरी अन्जाम क्या होगा। वो तो अपने आप को तौहीद के अक़ीदे के हुक्म में मिटा देते हैं और अपनी जान व माल इज़्ज़त व आबरू और अपने सारे साधनों को अल्लाह के हवाले कर देता है वो इन चीज़ों के ज़रिये लोगों के दिलो में उच्च मूल्य और बेश व बहार मक़सद को जमा देता है। और उनकी अक़्ल व शिक्षा के स्तर को समाज और जीवन के सभी कामों में बहुत श्रेष्ठ कर देता है। इन्ही आधार पर दीन के उलमा और फ़ुक़्हा की एक बड़ी संख्या ने मुसलमानों की हिजरत को दारूलकुफ़्र से किसी ऐसे देश की ओर फ़र्ज़ घोषित कर दिया है जहां पर इस्लाम धर्म को सम्मान व महानता और श्रेष्ठता प्राप्त हो। लेकिन इस हिजरत का मसला इस्लामी फ़िक़ के माहिरीन और इस्लामी चिन्तक व विद्वानों के बीच अलग–अलग मत रहा है। इस बहस के विषय में कई लोगों ने शिद्दत से काम लिया है। विशेषतयः उन हालात में जिन में जिम्मेदारी को निभाना इस्लाम के शआएर को इस्लाम पर अमल करना कठिन हो जाता है। और मुसलमान अलग–अलग प्रकार की आज़माइशों से दो चार हो जाते हैं। और सही अक़ीदा व ईमान पर जमे रहना और धार्मिक स्तर को प्रकट करना कठिन हो जाता है। बल्कि इस्तीसाल व नस्ल समाप्ति का सामना करना पड़ता है और उन्हे हर समय और हर क्षण तबाही व बर्बादी का ख़तरा बना रहता है। और उनकी निगाहों के सामने हब्शा की ओर हिजरत की तस्वीरें घूमने लगती हैं जिस दिन न अपना कोई वतन था और न कोई हुकूमत थी मगर ये ज़ज़्बा त्याग और जिहाद के शौक़ और केवल खुदा की राह में हिजरत व जिहाद की अदायगी सुन्नत पर अल्लाह का कलमा और शरीअत के आदेशों की सीमांए को बताना व लागू करने के लिये था। ये हिजरत एक ख़ालिस इस्लामी सरचश्मा है। जिसकी बुनियाद ईमान और यक़ीन पर हैं। इसको ग़ैर मुस्लिम ताक़तों ने तुच्छ उद्देश्यों की पूर्ति के लिये अपनाया ताकि मुसलमानों की एकता को तार तार करें और जैसे हमारी ग़फ़लत इसकी तरफ़ से बढ़ती जा रही है वैसे इस्लाम के दुश्मन के पंजे इसकी तरफ़ बढ़ रहे हैं।

नोबल ईनाम

ऐतिहासिक वास्तविकताओं के प्रकाश में

जनाब शाह आलम

अख़बारों व पत्रिकाओं में जब "नोबल पुरुस्कार" की बात आती है तो कुछ लोग समझते हैं कि ये कोई बड़ा भारी–भरकम ईनाम है। कुछ लोग तो इसे इज़्ज़त व सम्मान का मसला बनाकर उसे दुनिया का सबसे बड़ा सम्मान समझने–समझाने लगते हैं। इसकी बुनियादी वजह ये है कि उन्हें ये मालूम नहीं कि ये ईनाम कहां से आता है?इसके देने के क्या ग़रज़ व मक़सद हैं?और इस्लामी व मिल्ली दृष्टिकोण से उसकी हैसियत क्या है?

भारत के कई नामवर ग़ैरमुस्लिम हस्तियों को ये ईनाम मिल चुका है। लेकिन "नोबल ईनाम" की चर्चा उस समय अधिक हो गया जब वैज्ञानिक की हैसियत से पाकिस्तान के मिस्टर अब्दुल कलाम क़ादियानी को मिला। उस समय से एक ख़ास ग्रुप के प्रोपगन्डों की वजह से इस्लामी देशों और मुस्लिम वर्गों में ये बड़ी अहमियत का हामिल हो गया बल्कि उसे एक महत्वपूर्ण मोजज़ा (चमत्कार) क़रार दिया जाने लगा और यहां तक बावर कराया जाने लगा ये ईनाम इस सदी का सबसे बड़ा ईनाम है और जिसको मिला वो "मुस्लिम क़ौम" में सदी का सबसे बड़ा प्राख्यात व्यक्ति है। इसलिये मुनासिब मालूम होता है कि नोबल ईनाम की वास्तविकता से लोगों को आगाह किया जाये।

नोबल ईनाम का इतिहास ये है कि 21 अक्टूबर 1833 ई0 में स्वीडन की राजधानी शाकहोम में एक व्यक्ति पैदा हुआ जिसका पूरा नाम, "अल्फ़रडाबिन हार्ड नोबेल" था। बड़ा होकर ये व्यक्ति एक माहिर वैज्ञानिक बना और 63 साल की उम्र पाकर 10 दिसम्बर 1896 ई0 को इटली में मर गया।

यही वह व्यक्ति है जिसने अपनी रसायन विज्ञान और इन्जीनियरिंग को परवान चढ़ाते हुए एक ख़तरनाक घातक हथियार "डायनामइट" की खोज की। इसके अतिरिक्त भी युद्ध के कई यन्त्र तारपेड इत्यादि पर उसकी बड़ी खोजे हैं। अपने ख़ास मिज़ाज व फ़िक्र की वजह से निहायत ही ख़ौफ़नाक और तबाही वाला यन्त्र तैयार करना उसका ख़ास फ़न था। उसने दुनिया को घातक हथियारों का सबक़ तो ख़ूब पढ़ाया लेकिन उस सबक़ का पहला असर ख़ुद उसी के ख़ानदान पर पड़ा। इसीलिये "डायनामाइट" का अनुभव करते हुए उसके भाई समेत तीन व्यक्ति बहुत ही इबरत नाक अन्दाज़ में इस प्रकार मर गये थे कि उन सबके चिथड़े, परख़्चे उड़ गये थे। अपने फ़न की महारत में जुनून के कारण ख़ानदान वालों की इबरतनाक मौत ने उसके दिल को तोड़ दिया। इसीलिये इस घटना से प्रभावित होकर उसने अपनी जायदाद का एक हिस्सा ईनाम के लिये दान कर दिया। दान करते समय दान की रक़त सौ साल पहले तिरासी लाख, ग्यारह हज़ार डालर थी। उसने ख़ासतौर पर ये वसीयत की कि अस्ल रक़म तो बैंक में महफ़ूज़ रहे और उसका ब्याज ईनाम के तौर पर बांटा जाता रहे।

इससे ये बात मालूम हो गयी कि, "नोबेल पुरुस्कार" वास्तव में ब्याज की रक़म है। क्योंकि उसके मालिक "अल्फ़डबानी नोबेल" ने अस्ल रक़म तो बैंक में सुरक्षित रखने की वसीयत की हुई है और बैंक सालाना ब्याज जो इस पर देगा, उस ब्याज की रक़म को ईनाम में देने का उपाय दिया था। इसीलिये यही ब्याज की रक़म अब तक ईनाम में दी जाती है और जिस कमेटी के ज़िम्मे ये ईनाम देना सुपुर्द किया गया है उसका नाम "नोबेल फ़ाउन्डेशन" रखा गया है। ये कमेटी हर साल पांच ईनाम बांटती है।

ईनाम के नाम से इस ब्याज की रक़म के बंटवारे का नियम ये है कि "नोबेल पुरुस्कार" 1– फ़िज़िक्स 2– फ़िज़ियालॉजी केमेस्ट्री 3– मेडिसिन 4– लिट्रेचर 5– और उन लोगो को जो शांति व सुलह–समझौते के हिस्सो में नुमायां किरदार अदा करने वाले होते हैं, दिया जाता है और ईनाम के बंटवारे का तरीक़ा ये होता है कि कमेटी ये ईनाम, केवल अपने अनुभव या सवाबदीद पर नहीं देती बल्कि इसकी मंजूरी और चुनाव विभिन्न कमेटियां करती हैं। नोबेल पुरूस्कार हासिल करने वाले उम्मीदवारों के नाम विभिन्न कमेटियों के सुपुर्द किये जाते हैं और वही इसका हक़दार चुनती हैं।

इसीलिये शांति का पुरुस्कार उस कमेटी के हवाले

होता है जिसके पांच मेम्बर होते हैं और उसका चुनाव नारोजीन की संसद करती है। साहित्य का पुरुस्कार फ्रांस और स्पेन की एक कमेटी करती है। केमेस्ट्री, फ़िज़िक्स के पुरुस्कार का चुनाव स्टाकहोम की वैज्ञानिक कमेटी करती है। फ़िज़ियालॉजी और मेडिशन पर भी स्टाकहोम की एक कमेटी ईनाम तय करती है। ये ईनाम पांच लोगों को बराबर–बराबर बांटा जाता है। नोबेल ईनाम की मात्रा ये होती है कि ये ईनाम तीन चीज़ों पर आधारित होता है। एक सोने का तमग़ा होता है, दूसरी आठ हज़ार पौंड की नक़द रक़म होती है तीसरी एक ताईदी व तस्दीक़ी सर्टिफ़िकेट।

इस ब्याज की रक़म के बंटवारे का आरम्भ नोबेल की पांचवी बर्सी के मौक़े पर सन् 1908 ई0 में किया गया था। अब तक ये ईनाम सैकड़ों लोगों को मिल चुका है। भारत में जिन लोगों ने ये ईनाम प्राप्त किया है उनमें सबसे ऊपर 1913ई0 में रवीन्द्र नाथ टैगोर थे। साहित्य वर्ग में नोबेल पुरुस्कार 1930 ई0 सर वी रमन को फिजिक्स में नुमायां स्थान प्राप्त करने के कारण मिला। सन् 1979 ई0 में एक स्त्री मदर टेरेसा को शांति का नोबेल पुरुस्कार मिला जो एक ईसाई औरत थी।

मुसलमानों में नोबेल पुरुस्कार के नाम से ये ब्याज का धन पाने वाले पहले व्यक्ति 1987 ई0 में मिस्र के भूतपूर्व राष्ट्रपति अनवर सादात हैं। इनको ये ईनाम दिये जाने की छोटी सी कहानी ये है कि 1978 ई0 में इस्राईल के प्रधानमंत्री मिस्टर बेगन को ईनाम मिला कि उसने यहूदियों का इस्राईली शासन अरब की धरती पर स्थापित कर दिया और अनवर सादात ने चूंकि देश व क़ौम को बालाए ताक़ रखकर अमरीका की जी हुज़ूरी में इस्राईल को स्वीकार कर लिया था। इसलिये नोबेल फ़ाउन्डेशन ने उनको भी नोबेल ईनाम दिया।

इसके बाद एक स्वतन्त्र मिस्री साहित्यकार "नजीब महफ़ूज़" को भी एक नावेल पर साहित्यिक पुरुस्कार मिला। इस नावेल की सबसे बड़ी ख़ूबी ये है कि इसमें इस्राईली और अमरीकी शासकों को खुश करने के लिये इस्लाम धर्म का और उसके धार्मिक पेशवाओं का ख़ूब मज़ाक़ उड़ाया गया है। यही कारण था कि इस नावेल की बद्ज़बानी के आधार पर मिस्र के स्वतन्त्र शासन ने इसके प्रकाशन पर पाबन्दी लगाते हुए प्रतिबन्धित कर दिया था। लेकिन चूंकि "नोबेल पुरुस्कार कमेटी" के सदस्यों के निकट ये लेखक का बड़ा नेक और एतिहासिक कारनामा था। इसीलिये बड़ी धूम–धाम से लेखक को ये पुरुस्कार दिया गया और इसका ख़ूब प्रचार भी किया गया।

पाकिस्तान में 1997ई0 में अब्दुस्सलाम क़ादियानी को फ़िज़िक्स में नोबेल ईनाम मिला। इस ईनाम में वो अकेला नहीं था बल्कि उसके साथ इस ईनाम में दो अमरीकन वैज्ञानिक भी शामिल रहे। इस ईनाम पर क़ादियानियों ने प्रोपगन्डे की दुनिया में धूम मचा दी। क़ादियानी धर्म के लोगों ने उसे अपने एक व्यक्ति का हैरतअन्गेज़ कारनामा बताया बल्कि उसे एक चमत्कार घोषित करते हुए क़ादियानियत की हक़्क़ानियत को साबित करना चाहा। अन्दरून ख़ाना क़ादियानियों ही के ज़ेरे असर भारत व पाकिस्तान की बहुत सी पत्रिकाओं ने इस नोबेल पुरुस्कार पर विशेष लेख प्रकाशित किये। कई संस्थाओं ने इस पर विशेष अंक भी प्रकाशित किये और इसक वैज्ञानिक कार्यों की सराहना की। "तहज़ीबुल अख़लाक़" अलीगढ़ ने भी अब्दुस्सलाम पर अंक प्रकाशित कर डाला। ये सब कुछ जानबूझ कर कहीं अन्जाने में।

अगर नोबेल पुरुस्कार के लक्ष्यों व उद्देश्यों और उसकी राजनीतिक हैसियत पर नज़र डालें तो मालूम होता है कि उस ईनाम का बंटवारे, चुनाव में सहयूनी राजनीतिज्ञ कार्यरत हैं। उनके छिपे हुए लाभ व उद्देश्य इससे जुड़े होते हैं। यही कारण है कि उपरोक्त पांचों वर्गों में श्रेष्ठ सेवांए करने वाले मुख़लिस मुसलमान इस ईनाम को अपने लिये जायज़ नहीं समझते बल्कि हमेशा इससे दूर रहते हैं। फिर भी ज़रा आप ईनाम पाने वालों पर ग़ायबाना निगाह डालें तो आप देखेंगे कि 1908 ई0 से अब तक ईनाम का सिलसिला जारी है। हर साल पांच लोगों को ईनाम दिये जाने का नियम है और दिया जाता है। एक सौ साल से ज़्यादा के समय में इस विशाल संसार में कोई एक भी मुसलमान इस लायक़ पैदा न हुआ जो इस ईनाम का हक़दार होता। क्या ज्ञान व साहित्य, लेखन व भाषण, अमन व शांति की लाइन में इस्लाम का नाम लेने वाला ऐसा न हुआ। हैरत पर हैरत ये है कि ये सभी ईनाम पाने वाले सहयूनी विचार वाले या यहूद व नसारा ही हुए।

एक अटल वास्तविकता

अब्दुल माजिद दरियाबादी (रह०)

आप के नज़दीक दुनिया में इन्सान के लिए सबसे ज़्यादा यक़ीनी चीज़ क्या है?क्या लम्बी उम्र?क्या सेहत की खूबी?क्या माल व दौलत?क्या इज़्ज़त व सम्मान?क्या औलाद व दोस्त की अधिकता?इनमें से या इस तरह की किसी भी चीज़ का हासिल होना किसी इन्सान के लिए भी विश्वस्नीय होना कहा जा सकता है? ज़रा भी ग़ौर कीजिए तो आपका दिल खुद ही ये जवाब देगा कि ये सभी चीज़ें केवल वक़्ती हैं। यानि इतनी अधिक कोशिश व प्रयास के बाद भी मुमकिन हैं मिलें, और सम्भव हैं न मिलें। यक़ीनी किसी हालत में भी नही कही जा सकतीं। इन्सान के लिए दुनिया में यक़ीनी चीज़, एक और सिर्फ़ एक है और वो मौत है। हर इन्सान को चाहे वो बच्चा हो या जवान, औरत हो या मर्द, पढ़ा लिखा हो या अनपढ़, सभी ग्रहों का बादशाह हो या ऐसा फ़कीर जिसके पास कुछ भी न हो। पहलवान हो या कमज़ोर इन्सान, पूरा वली हो या काफ़िर, जिस वाक़्ये के पेश आये बग़ैर चारह नही, वो मौत और सिर्फ़ मौत है।

फ़िर क्या आप के निकट मौत केवल इसका नाम है कि सांस बन्द हो जाए, दिल काम करना बन्द कर दे, और खून का दौरान रुक जाए?अगर आप मौत का मतलब केवल ये समझते हैं तो आपसे इस बारे में बातचीत करने से कोई लाभ नहीं। लेकिन अगर आप मौत का मतलब ये समझते हैं कि वो एक आने वाली और न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी की प्रस्तावना है। और आपको एक दूसरी दुनिया की ओर, जो इस भौतिक दुनिया से कहीं अधिक बड़ी है, ले जाने का दरवाज़ा है, तो क्या आपके ख्याल मे इस दूसरी दुनिया के बारे मे तैयारियां करना मुनासिब और ज़रूरी नहीं। क्या इस नई और क़ायम रहने वाली दुनिया मे अमन और चैन से रहने की बाबत आपको कुछ हिदायतें नही पहुंची हैं। क्या इन हिदायतों पर अमल करना या अमल करने की कोशिश करना आपके ख्याल मे वक़्त बर्बाद करना है?

आप कोठे से नीचे नही कूद पड़ते इसलिए कि चोट लगना विश्वस्नीय है, दरिया मे नही कूद पड़ते इसलिए कि डूब जाना विश्वस्नीय है, जिस वाक्ये के पेश आने मे ज़रा सा भी शक व शुब्हा नही है। इसी की ओर से आप इतना अधिक लापरवाह हैं। और अपनी लापरवाही पर आपको कोई शर्मिन्दगी तक नही। बल्कि जो लोग ये चर्चा अधिक करते रहते हैं जो लोग इस आने वाले यक़ीनी वक़्त की सोच मे ज्यादा रहते हैं, उनको आप कमअक़्ल, बेकार करार देते है। और ये शायद इसलिए है कि आपने अपने नज़दीक जिन लोगो को मामले की बहुत अधिक समझ रखने वाला, अक्लमन्द व खुशनसीब ठहरा रखा है उन की किताबों मे, उनकी बातचीत में, उनके दिलों मे कभी भूले से भी इस यक़ीनी वक़्त की याद नही आती। और वो मौत के ख़ौफ़ को शायद अपनी अक़्ल, इल्म और सभ्यता के विपरीत समझते हैं।

इन पर जो कुछ गुज़रेगी वो बहरहाल उन्हे झेलना पड़ेगा, आप अपनी फ़िक्र कीजिए और अपनी हालत को सोचिए, आप नौकरी की तलाश में रात दिन कैसा सर ख़पाते रहते हैं। आमदनी को बढ़ाने की चिन्ता में किस क़दर मशगूल रहते हैं, सेहत व ताक़त के उपायों में किस तरह घुले जाते हैं, सर्दी और गर्मी से बचने के लिए बहुत पहले से कैसे कैसे सामान ठीक करते हैं। अपने यश के लिए क्या क्या चालें चलते हैं, अपनी ज़िन्दगी आराम से बिताने के लिए क्या कुछ जतन नही करते हैं। लेकिन कभी आप ये भी सोचते हैं कि जितनी नमाजें छूटीं हैं उनका जवाब देना होगा?जितने रोज़े बिला वजह छूटे हैं उनकी पूछताछ होगी?जिन जिन लोगों के हक़ को मारा है उनके सामने मुजरिम बनकर आना पड़ेगा?जिन अमानतों मे खयानतें की हैं उन सब का हिसाब देना होगा? क़ौम व मिल्लत के ख़िलाफ़ जिन–जिन कार्यवाहियों मे शिरकत की है उनकी पूछताछ होगी। बुरे काम, बदज़बानी, झूठ, रिश्वत, ब्याज, इत्यादि हर चीज़ के बारे में पूछताछ और कैसी सख़्त पूछ होगी। इस नाज़ुक घड़ी को याद रखने और इसके लिए तैयार रहने की तौफीक़ खुदाए करीम इन लाईनों के लिखने वालों और पढ़ने वालों सबको नसीब करे।

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

पूरी दुनिया के धर्मों मे केवल इस्लाम ऐसा धर्म है जिसका आधार अल्लाह को एक मानने के विश्वास पर है। मुसलमान होने की ये सबसे पहली शर्त है कि अपने पैदा करने वाले को एक मानना, केवल इसी के आगे सर झुकाए और इसी की इबादत करे। इबादत का ये रिश्ता केवल एक ही ज़ात से हो सकता है कोई दूसरा इसमे साझी नही चाहे जितना ही महबूब और काबिले तअज़ीम हो। इस की आख़िरी मिसाल आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद मुस्तफा स0अ0 की है, जिनकी मुहब्बत ईमान का हिस्सा है, जिनके इश्क़ मे हर मुसलमान अपनी जान की बाज़ी लगाने को तैयार है लेकिन आप स0अ0 से मुसलमान का रिश्ता इबादत का नही है, मोहब्बत का है, अज़मत का है, उपासना का है, इबादत केवल अल्लाह की ही की जाएगी अगर किसी ने भी इसमे किसी हैसियत से किसी को भी शरीक़ किया तो वह मुसलमान नही रह जाएगा।

"वन्दे मातरम्" का मसला कोई नया नही है। देश की आज़ादी के बाद ही जब इसको राष्ट्रगीत मे शामिल किया जा रहा था उसी समय मुसलमानो की ओर से ये बात साफ कर दी गई थी इसमे ज़मीन की "वन्दना" यानि इबादत की चर्चा है इसलिए किसी मुसलमान के लिए ये मुमकिन नही कि वह इसको पढ़ सके, ये मसला इसके विश्वास और ईमान का है। बात उसी समय खत्म हो गई थी, न उस समय मुसलमानो की वफादारी पर कोई नुक़्ता लगाया जा सकता था और न देश से इनकी मुहब्बत के बारे मे कुछ और सोचा जा सकता था। मुसलमानो ने देश की आज़ादी मे अहम भूमिका निभायी थी और सबसे ज़्यादा कुर्बानियां पेश की थीं जो देश के इतिहास का एक सुनहरा अध्याय है। कुछ लोगो को छोड़कर अंग्रेज़ो से साठगांठ करते जितने लोग सामने आये वह सब ग़ैर मुस्लिम थे लेकिन जब एक महत्वपूर्ण उद्देश्य को सामने रखकर फ़िरक़ा परस्ती को बढ़ावा दिया जाने लगा तो तरह–तरह के मुद्दे पैदा किये गये ताकि हिन्दु–मुस्लिम फ़िरक़ा परस्ती पैदा हो और देश की एकता भंग हो जाए।

जब बी.जे.पी. सत्ता मे आयी तो ये मसला उठाया गया था लेकिन हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी रह0 की कद्दावर शख़्सियत के एक बयान से मसला समाप्त हो गया और फिर पन्द्रह साल बीत गये और किसी ने इस बारे मे सोचा भी नही लेकिन इधर चन्द महीनो से पूरे देश मे एक तूफान मचा है कि अगर मुसलमानो ने इससे इनकार किया तो वह सबसे बड़ा ग़द्दार है और बहुत से मुसलमान भी सफाई देने मे लगे हुए हैं कि इसके अर्थ को समझने की आवश्यकता है। अगर इसमे इबादत का अर्थ न हो तो इसके पढ़ने मे क्या हर्ज है। ये सारी बातें लकीर पीटने के समान हैं, ये बात भाषा के माहिरों के यहां तय है कि "वन्दना" के माने ही इबादत करने के हैं और हर वास्तविकता जानने वाला देशप्रेमी जानता है कि इसके पढ़ने या न पढ़ने से देश के साथ प्रेम का कोई जोड़ नही। भाइयों जिनकी धार्मिक व्यवस्था मे सैंकड़ो देवी देवताओं और कितनो की "वन्दना" करते हैं वह अगर ये गीत पढ़ें तो धार्मिक एतबार से उन पर फर्क़ नही पड़ता लेकिन एक मुसलमान के लिए ये शिर्क है! जिसके बाद मुसलमान मुसलमान नही रह जाता है। ये एक सीधी–सीधी बात है जो अगर समझ ली जाए तो फिर कोई मसला ही पैदा न हो लेकिन मसले पैदा किये जाते हैं और इसके पीछे ख़ुदा जाने क्या–क्या उद्देश्य होते हैं। यकीनन इन जैसे मुद्दे पैदा करने और इनको बढ़ावा देने से देश के वातावरण मे सुकून बाक़ी नही रह सकता है और न कोई गम्भीर और ठोस काम किये जा सकते हैं। और फिर ज़्यादातर सलाहियतें बाहमी मनाफरत के कामों मे ही खर्च हो जाती हैं और देश उन्नति के बजाए अवनति के मार्ग पर पड़ जाता है।

देश के ज़िम्मेदारों को इस मसले मे ठोस और गम्भीर क़दम उठाने की आवश्यकता है। इसके लिए इस देश के मिज़ाज को समझना होगा। आज़ादी के सूरमाओं ने इसका जो ढ़ांचा बनाया था और इसका जो आधार तय किया था उनको सामने रखना होगा। अफसोस की बात ये है कि एक बड़ा वर्ग फ़िरक़ा परस्ती को बढ़ावा देने के लिए सब कुछ करने को तैयार है और इसके लिए मानवता की दुश्मन ताकतों से भी साठगांठ करने को रवा रखा जाता है। अगर इस बारे मे ठण्डे दिल से सोचा न गया तो आगे चलकर इसके परिणाम बहुत खतरनाक हो सकते हैं।

इसके लिए हर तरह के लाभ से आगे बढ़कर देश के लाभ को सोचना होगा। आज ये बीमारी सबसे ज़्यादा राजनीतिक दलों मे पैदा होती जा रही है जिनको अपने लाभ और उद्देश्य के लिए देश को किसी भी खतरे मे डाल देना गवारा है। इस स्थिति को बदलने की आवश्यकता है।

स्वयं का निरीक्षण

दुनिया जिस रास्ते पर चल रही है, चलने दीजिये, इसकी ज़िम्मेदारी यक़ीनन आप पर नहीं, लेकिन स्वयं आप किस रास्ते पर चल रहे हैं? इसकी ज़िम्मेदारी यक़ीनन आप पर है। आप अपने तौर–तरीक़ों से किस सभ्यता की नुमाइन्दगी कर रहे हैं?आप अपनी रोज़ाना की ज़िन्दगी से किस व्यवस्था को ताक़त पहुंचा रहे हैं?आपका दिल दूसरों की ख़िदमत करके ज़्यादा ख़ुश होता है या दूसरों से ख़िदमत लेकर?आपका वक़्त मस्जिदों में ज़्यादा ख़र्च होता है या पार्कों में?आपकी दिलचस्पी ख़ानक़ाहों में ज़्यादा होती है या बाज़ारों में?आपकी रातों के पिछले पहर, तहज्जुद और अपने रब की याद में बसर होते हैं या थियेटर से घर वापिस आने में?आपको मज़ा इसमें आता है कि आपके मुंह पर आपकी तारीफ़ और दूसरों के पीछे उनकी बुराई हो रही हो या उसके उल्टे की इसमें कि आपको कोताहियों और लापरवाहियों पर आपके सामने आपको बुरा कहा जा रहा हो और दूसरों की ख़ूबियों और फ़ज़ीलतों की दाद उनके पीछे दी जा रही हो?अपनी जगह पर सोचिये?और फ़ैसला कीजिये की आपकी ज़िन्दगी का रुख़ इन दो राहों में किस ओर है? कहीं ख़ुदा न करे बे सोचे समझे, आप उस संस्कृति, उस सभ्यता, जीवन बिताने की उस व्यवस्था को तो मदद नहीं पहुंचा रहे हैं जिसका परिणाम दूसरी दुनिया में नहीं, इसी दुनिया में तबाही, बर्बादी व रुस्वाई है?

मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

VOLUME-05

ISSUE-10

October 13

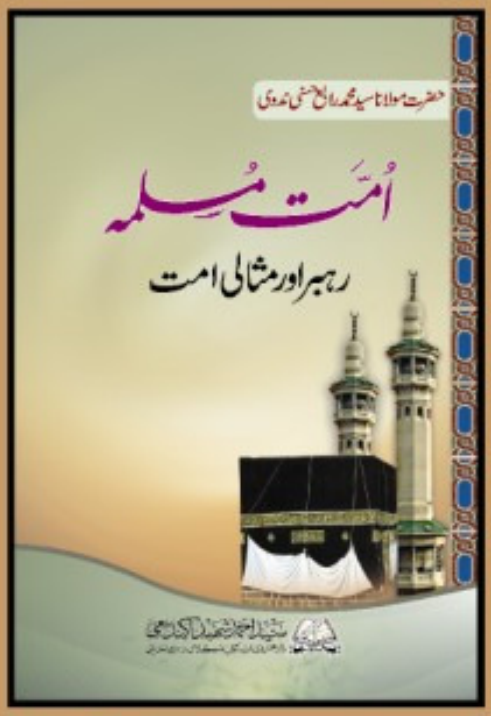

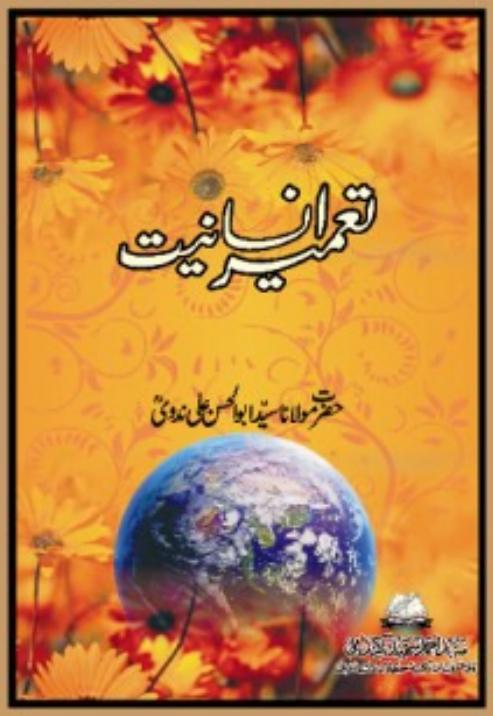

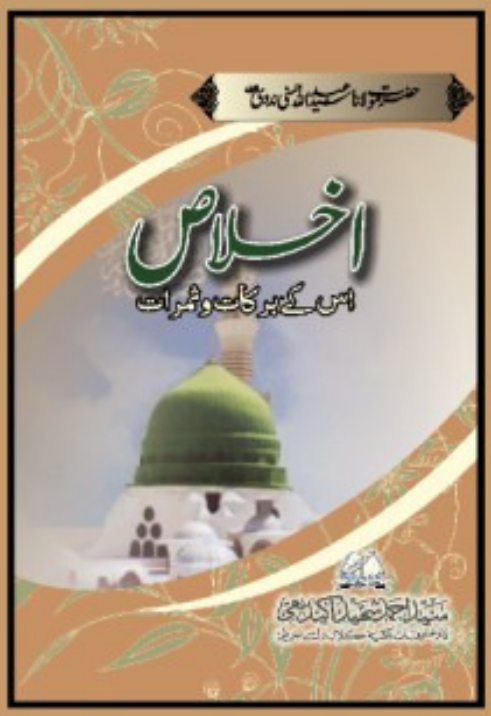

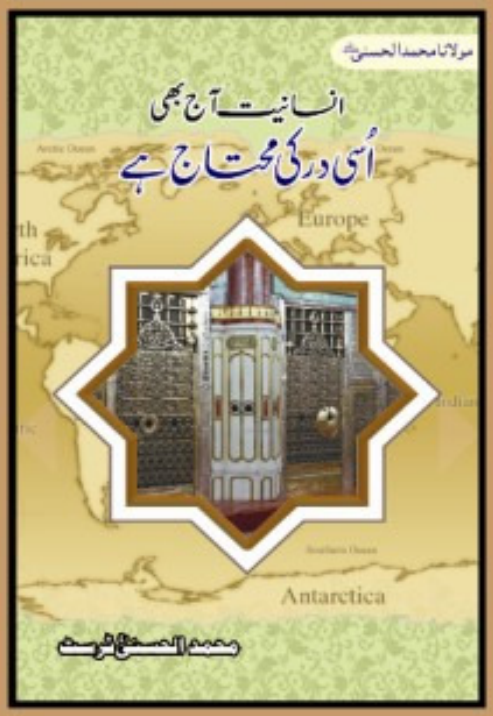

Sayyid Ahmad Shaheed Academy, Raebareli (Mob: 9918385097)

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile: 9918385097, 9918818558
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.